॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

सैम्पल

26/01/1998 04:20 AM

Kanpur,Uttar Pradesh,India

निर्मित

सनातन ज्योति

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	26/01/1998
जन्म समय	04:20
जन्म स्थान	Kanpur,Uttar Pradesh,India
अक्षांश	26 N 26
देशांतर	80 E 19
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	23:49:48
सूर्योदय	6:56:3
सूर्यास्त	17:46:28

घात चक्र

महीना	श्रावण
तिथि	3,8,13
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	भरणी
योग	वज्र
करण	तैतिल
प्रहर	1
चंद्र	12

पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण त्र्योदशी
योग	हर्षण
नक्षत्र	मूल
करण	गर

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
योनि	स्वान
गण	राक्षस
नाड़ी	आदि
जन्म राशि	धनु
राशि स्वामी	गुरु
नक्षत्र	मूल
नक्षत्र स्वामी	केतु
चरण	4
युञ्जा	प्रभाग
तत्त्व	अग्नि
नामाक्षर	भी
पाया	ताम्र
लग्न	धनु
लग्न स्वामी	गुरु

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	मकर	11:56:21	शनि	श्रावण	चन्द्र	दूसरा
चन्द्र	--	धनु	11:55:47	गुरु	मूल	केतु	पहला
मंगल	--	कुम्भ	06:36:40	शनि	धनिष्ठा	मंगल	तिसरा
बुध	--	धनु	24:27:43	गुरु	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	पहला
गुरु	--	कुम्भ	03:56:28	शनि	धनिष्ठा	मंगल	तिसरा
शुक्र	हाँ	धनु	27:03:51	गुरु	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	पहला
शनि	--	मीन	21:09:53	गुरु	रेवती	बुध	चौथा
राहु	हाँ	सिंह	18:34:33	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	नौवां
केतु	हाँ	कुम्भ	18:34:33	शनि	शतभिसा	राहु	तिसरा
लग्न	--	धनु	01:59:53	गुरु	मूल	केतु	पहला

सूर्य
मकर
श्रावण

योगकारक

चन्द्र
धनु
मूल

सम

मंगल
कुम्भ
धनिष्ठा

योगकारक

बुध
धनु
पूर्व षाढ़ा

हानिप्रद

गुरु
कुम्भ
धनिष्ठा

सम

शुक्र
धनु
उत्तर षाढ़ा

हानिप्रद

शनि
मीन
रेवती

हानिप्रद

राहु
सिंह
पूर्व फाल्गुनी

--

केतु
कुम्भ
शतभिसा

--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

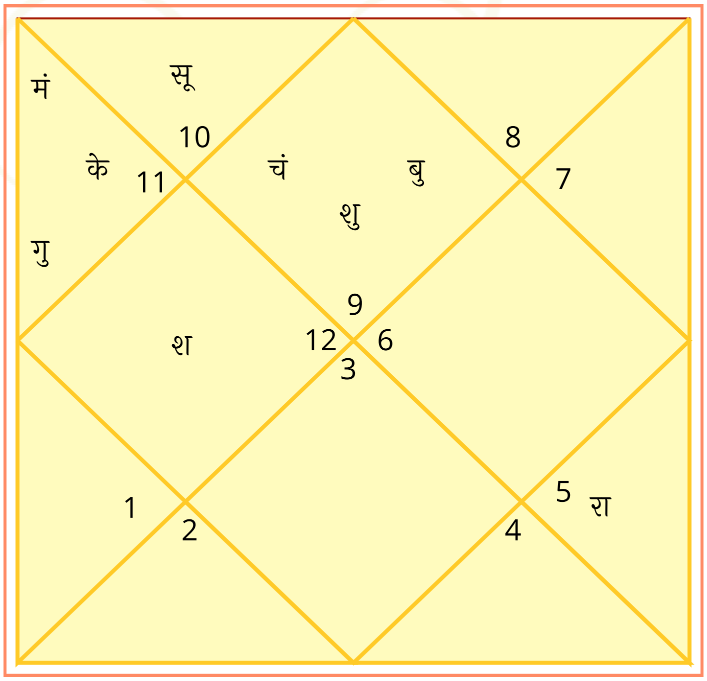
मं
सू
10
के
11
चं
बु
8
7
शु
गु
9
श
12
6
3
1
2
5
रा
4

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

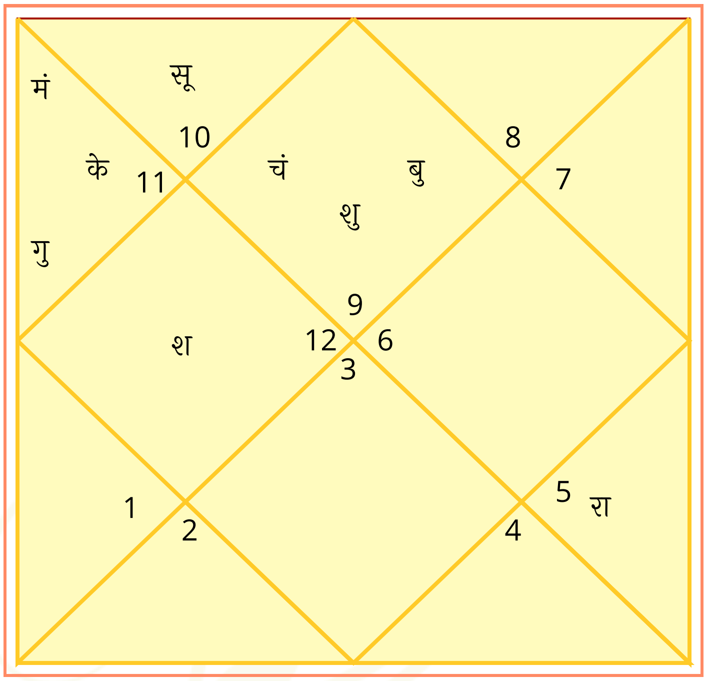
मं
सू
10
के
11
चं
बु
8
7
शु
गु
9
श
12
6
3
1
2
5
रा
4

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

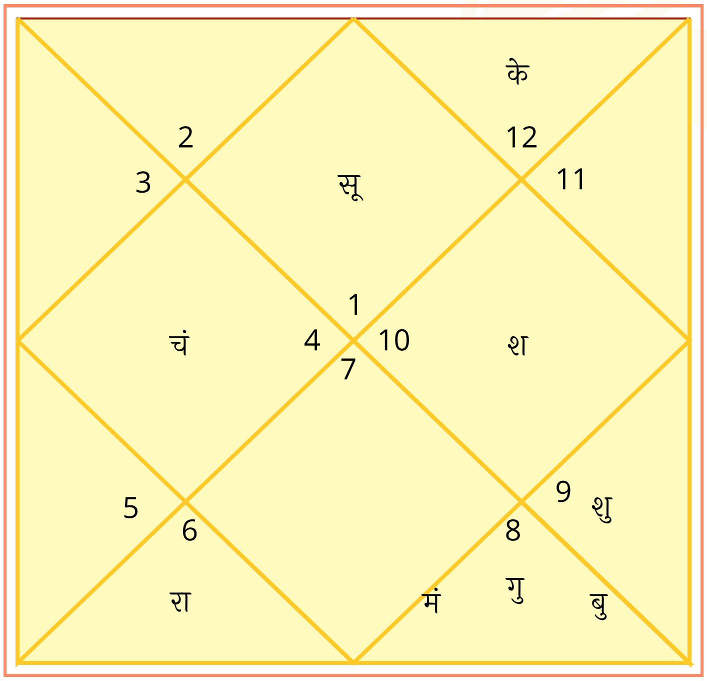
के
2
12
3
सू
11
1
चं
4
10
श
7
9
शु
5
6
8
रा
मं
गु
बु

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

भाव सन्धि

लग्न - 01:59:53 दशम भाव मध्य - 14:44:12

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	धनु	01:59:53	धनु	19:07:16
2	मकर	06:14:39	मकर	23:22:02
3	कुम्भ	10:29:26	कुम्भ	27:36:49
4	मीन	14:44:12	मीन	27:36:49
5	मेष	10:29:26	मेष	23:22:02
6	वृष	06:14:39	वृष	19:07:16
7	मिथुन	01:59:53	मिथुन	19:07:16
8	कर्क	06:14:39	कर्क	23:22:02
9	सिंह	10:29:26	सिंह	27:36:49
10	कन्या	14:44:12	कन्या	27:36:49
11	तुला	10:29:26	तुला	23:22:02
12	वृश्चिक	06:14:39	वृश्चिक	19:07:16

चलित कुंडली

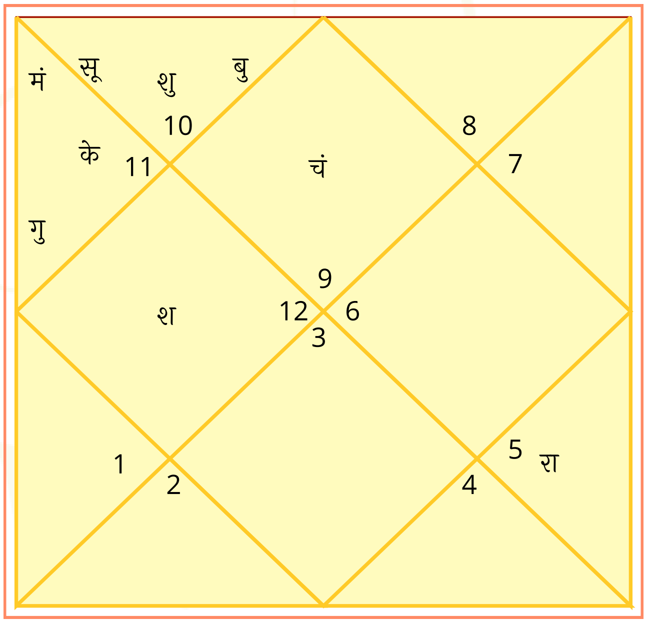

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली

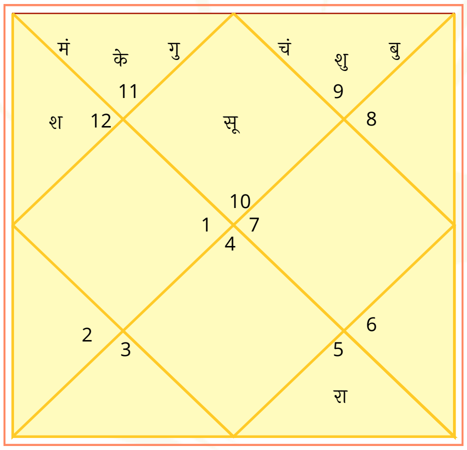
मं
के
गु
चं
शु
बु
11
9
श
12
सू
8
10
1
7
4
2
3
6
5
रा

शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली

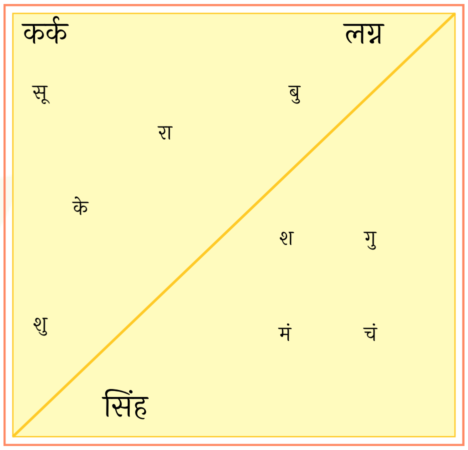
कर्क
लग्न
सू
बु
रा
के
श
गु
शु
मं
चं
सिंह

वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली

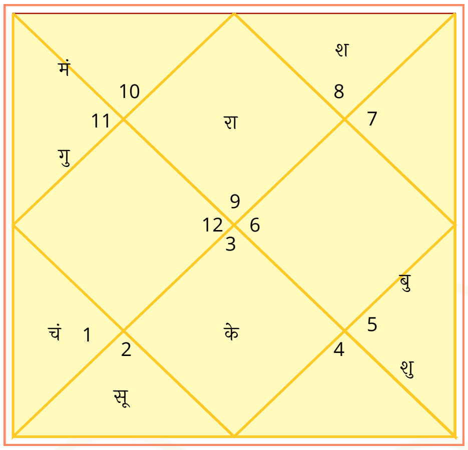
श
मं
10
8
7
11
रा
गु
9
12
6
3
बु
चं
1
के
5
2
4
शु
सू

भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली

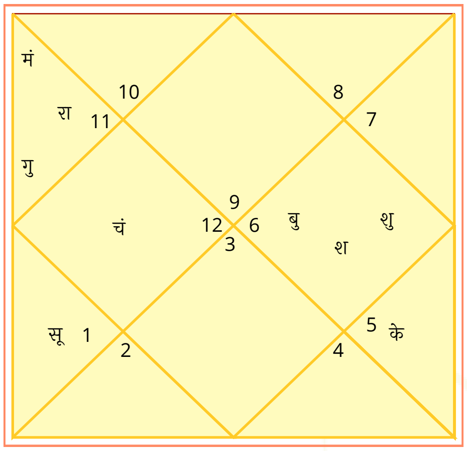
मं
10
8
रा
11
7
गु
9
चं
12
6
बु
शु
3
श
सू
1
5
के
2
4

भाग्य

पंचमांश कुंडली

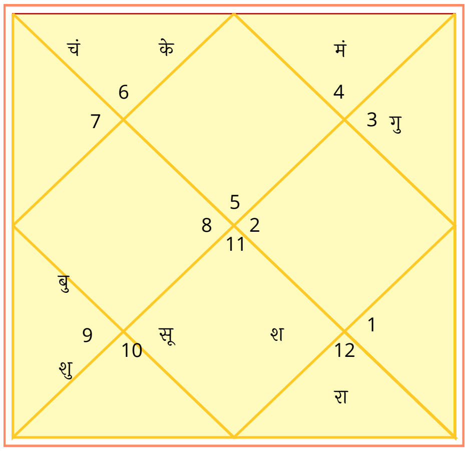
चं
के
मं
6
4
7
3
गु
5
8
2
11
बु
9
सू
श
1
10
12
शु
रा

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली

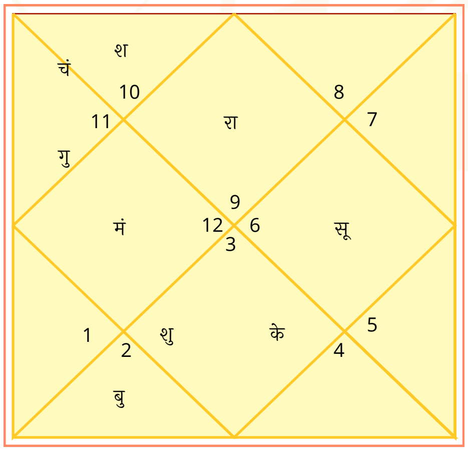
श
चं
10
8
11
रा
7
गु
9
मं
12
6
सू
3
1
शु
के
5
2
4
बु

सन्तान

अष्टमांश कुंडली

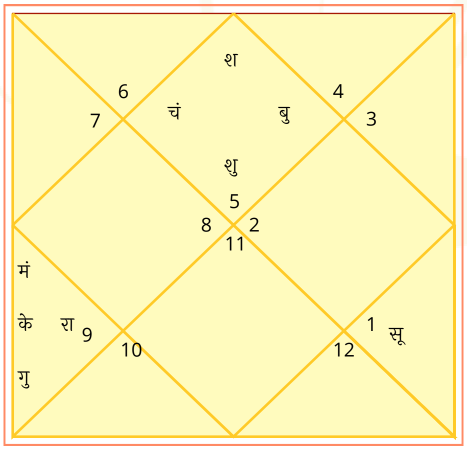
श
6
4
7
चं
बु
3
शु
5
8
2
11
मं
के
रा
9
1
सू
10
12
गु

आयु

दशमांश कुंडली

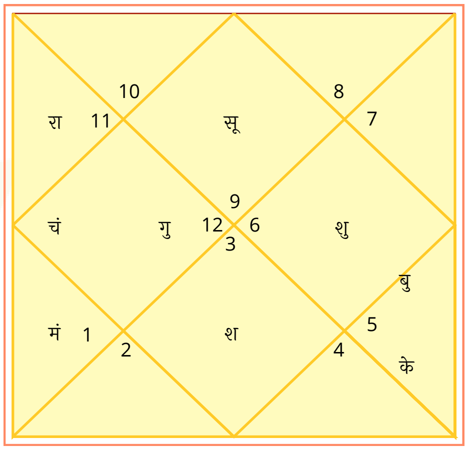
10
8
रा
11
सू
7
9
चं
गु
12
6
शु
3
बु
मं
1
श
5
2
4
के

व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

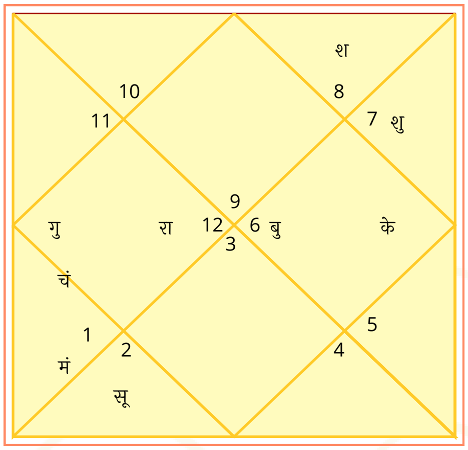
श
10
8
11
7
शु
9
गु
रा
12
6
बु
के
3
चं
1
5
2
4
मं
सू

माता-पिता, पैतृक सुख

वर्ग कुंडली

षोडशांश कुंडली

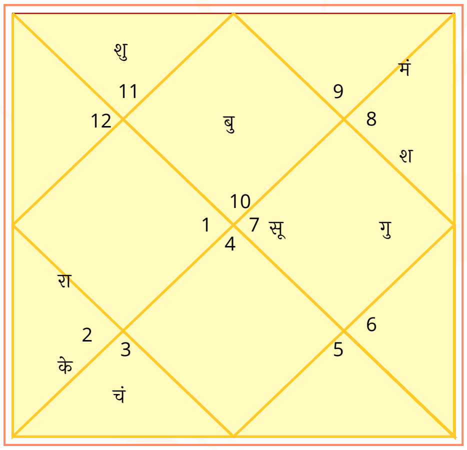
शु
मं
11
9
12
बु
8
श
10
1
7 सू
गु
4
रा
2
6
के
3
5
चं

सुख, दुख, वाहन

विशमांश कुंडली

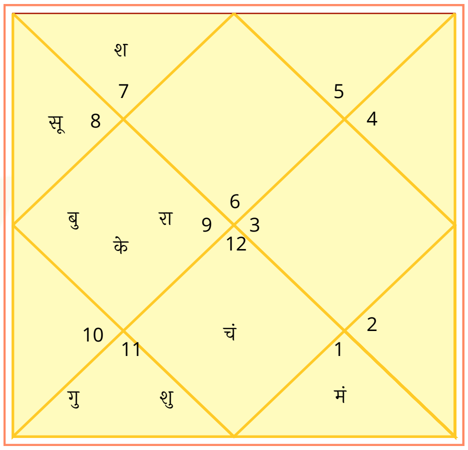
श
7
5
सू
8
4
6
बु
रा
9
3
के
12
10
चं
2
11
1
गु
शु
मं

आध्यात्मिक प्रगति एवं पूजा पाठ

चतुर्विंशांश कुंडली

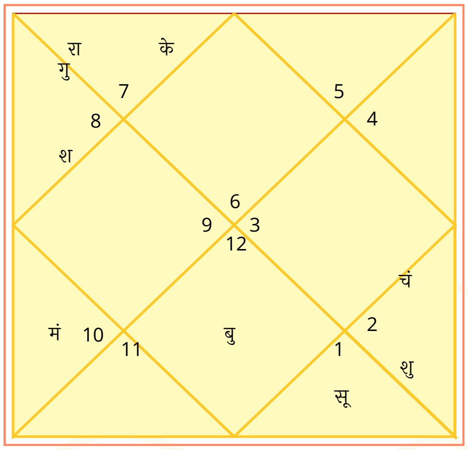
रा
के
गु
7
5
8
4
श
6
9
3
12
चं
मं
10
बु
2
11
1
शु
सू

शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

भांष कुंडली

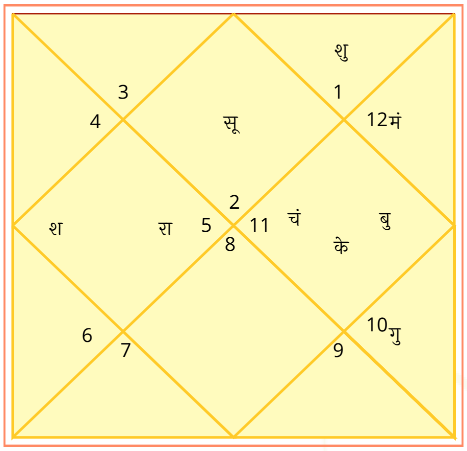
शु
3
1
4
सू
12मं
2
श
रा
5
11
चं
बु
8
के
6
10गु
7
9

शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

त्रिषमांष कुंडली

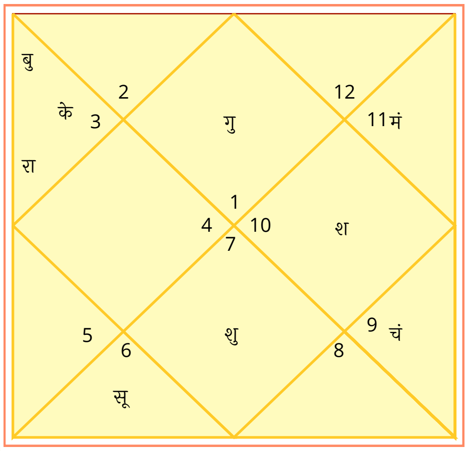
बु
2
12
के
3
गु
11मं
रा
1
4
10
श
7
5
शु
9
चं
6
8
सू

बुराई, विपत्तियां

खवेदांश कुंडली

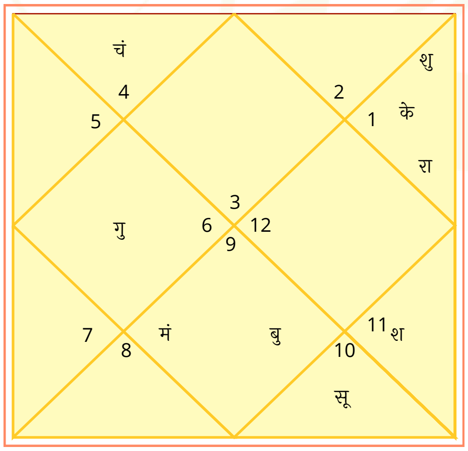
चं
शु
4
2
5
1
के
रा
3
गु
6
12
9
7
मं
बु
11 श
8
10
सू

शुभ और अशुभ प्रभाव

अक्षवेदांश कुंडली

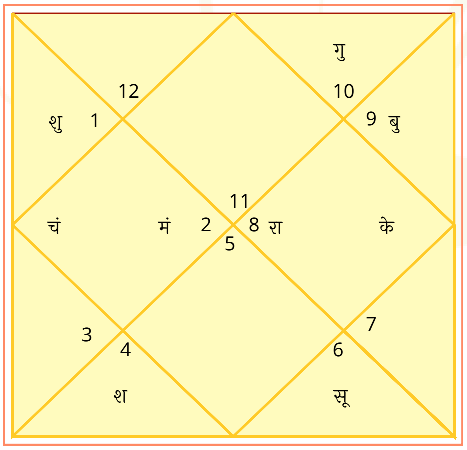
गु
12
10
शु
1
9
बु
11
चं
मं
2
8
रा
के
5
3
7
4
6
श
सू

जातक का चरित्र और आचरण

षष्टयांश कुंडली

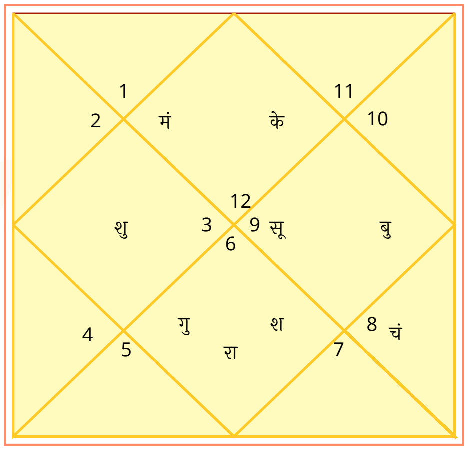
1
11
2
मं
के
10
12
शु
3
9
सू
बु
6
4
गु
श
8
चं
5
रा
7

सामान्य खुशियाँ

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	--	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	--	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	--	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	--

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	मित्र	--	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	--	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	--	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	--	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	--	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	--

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	--	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	--	सम	सम	मित्र	मित्र
बुध	अतिमित्र	अतिशत्रु	मित्र	--	मित्र	सम	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	--	सम	मित्र
शुक्र	सम	अतिशत्रु	मित्र	सम	मित्र	--	अतिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	--

कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	भाव
सूर्य	--	मकर	281:56:21	शनि	दूसरा
चन्द्र	--	धनु	251:55:47	गुरु	पहला
मंगल	--	कुम्भ	306:36:40	शनि	तिसरा
बुध	--	धनु	264:27:43	गुरु	पहला
गुरु	--	कुम्भ	303:56:28	शनि	तिसरा
शुक्र	हाँ	धनु	267:03:51	गुरु	पहला
शनि	--	मीन	351:09:53	गुरु	चौथा
राहु	हाँ	सिंह	138:34:33	सूर्य	नौवां
केतु	हाँ	कुम्भ	318:34:33	शनि	तिसरा
लग्न	--	धनु	241:59:53	गुरु	पहला

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	चरण	सब	सब-सब
सूर्य	श्रावण	चन्द्र	1	राहु	राहु
चन्द्र	मूल	राहु	4	चन्द्र	शनि
मंगल	धनिष्ठा	मंगल	4	चन्द्र	सूर्य
बुध	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	4	बुध	शुक्र
गुरु	धनिष्ठा	मंगल	4	शुक्र	गुरु
शुक्र	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	1	सूर्य	शनि
शनि	रेवती	बुध	2	शुक्र	बुध
राहु	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	2	राहु	गुरु
केतु	शतभिसा	राहु	4	चन्द्र	गुरु
लग्न	मूल	राहु	1	राहु	मंगल

कृष्णमूर्ति पद्धति भाव संधि और कुंडली

भाव	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
1	धनु	265:49:41	गुरु	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	बुध	शनि
2	मकर	298:37:35	शनि	धनिष्ठा	मंगल	शनि	केतु
3	मीन	334:19:53	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	शनि	शुक्र
4	मेष	08:34:00	मंगल	अश्विनी	केतु	गुरु	शुक्र
5	वृष	37:50:05	शुक्र	कृतिका	सूर्य	शुक्र	शुक्र
6	मिथुन	62:42:21	बुध	मृगशिरा	मंगल	शुक्र	शुक्र
7	मिथुन	85:49:41	बुध	पुनर्वसु	गुरु	केतु	शुक्र
8	कर्क	118:37:35	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	शनि	केतु
9	कन्या	154:19:53	बुध	उत्तर फाल्गुनी	सूर्य	शनि	चन्द्र
10	तुला	188:34:00	शुक्र	स्वाति	राहु	राहु	मंगल
11	वृश्चिक	217:50:05	मंगल	अनुराधा	शनि	केतु	गुरु
12	धनु	242:42:21	गुरु	मूल	राहु	गुरु	बुध

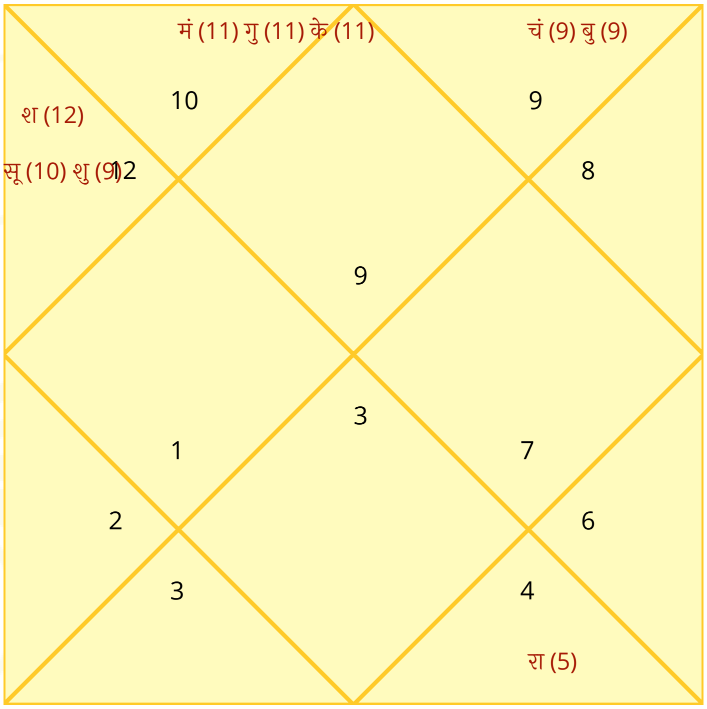

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	0	1	0	0	1	0	3
वृषभ	0	1	1	1	0	1	0	1	5
मिथुन	0	0	0	0	1	1	1	0	3
कर्क	1	0	0	0	1	0	0	0	2
सिंह	1	0	1	1	0	0	0	0	3
कन्या	1	1	1	1	0	0	1	1	6
तुला	1	1	1	1	1	0	1	1	7
वृश्चिक	1	0	1	1	0	1	1	1	6
धनु	0	0	1	0	1	0	1	0	3
मकर	1	0	0	0	0	0	1	0	2
कुंभ	1	1	1	1	0	0	0	1	5
मीन	0	0	1	0	0	0	1	1	3

* * *

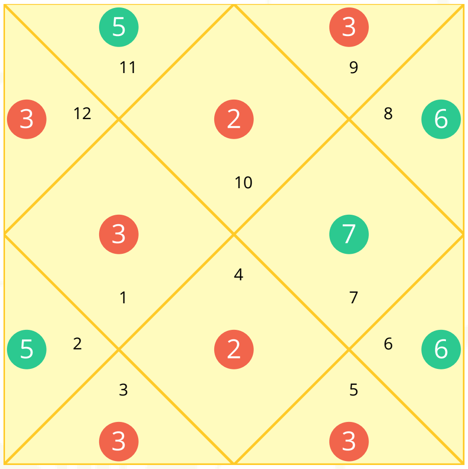
5
11
3
9
3
12
2
8
6
10
3
7
1
4
7
5
2
2
6
6
3
5
3
3

अभिप्राय

पिता

व्यक्तिगत प्रभाव

राजकीय कृपा

सूचक

🟩 शुभ

🟥 अशुभ

🟦 मिश्रित

चंद्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	1	0	1	0	0	3
वृषभ	0	1	0	0	1	0	1	1	4
मिथुन	1	1	1	1	0	1	0	0	5
कर्क	1	0	1	1	0	0	1	0	4
सिंह	1	0	0	0	1	1	1	0	4
कन्या	0	1	0	1	1	1	0	1	5
तुला	1	1	1	1	0	1	0	1	6
वृश्चिक	1	0	1	0	1	0	0	0	3
धनु	0	1	1	1	1	0	0	0	4
मकर	0	0	0	0	1	0	1	0	2
कुंभ	0	1	0	1	1	1	0	1	5
मीन	1	0	1	1	0	1	0	0	4

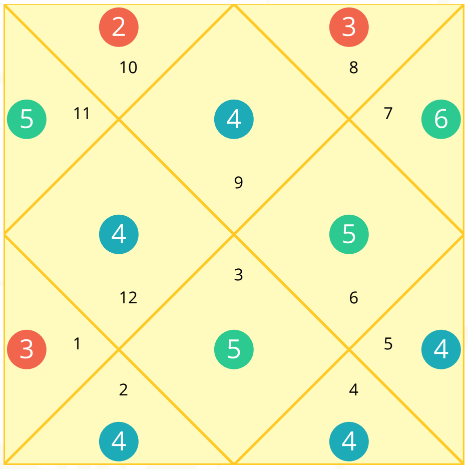
2
3
10
8
5
11
4
7
6
9
4
5
12
3
6
3
1
5
5
4
2
4
4
4

अभिप्राय

माता मन भावना बुद्धि

सूचक

🟩 शुभ

🟥 अशुभ

🟦 मिश्रित

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	0	1	0	0	0	0	1
वृषभ	1	1	1	1	0	1	0	1	6
मिथुन	1	0	0	0	0	0	1	0	2
कर्क	0	0	0	0	1	1	0	0	2
सिंह	0	0	1	0	0	0	0	0	1
कन्या	0	0	1	0	0	0	1	1	3
तुला	1	1	0	1	0	1	1	1	6
वृश्चिक	1	0	1	0	1	1	1	0	5
धनु	0	0	1	0	1	0	1	1	4
मकर	0	0	0	0	1	0	1	0	2
कुंभ	0	1	1	1	0	0	0	1	4
मीन	1	0	1	0	0	0	1	0	3

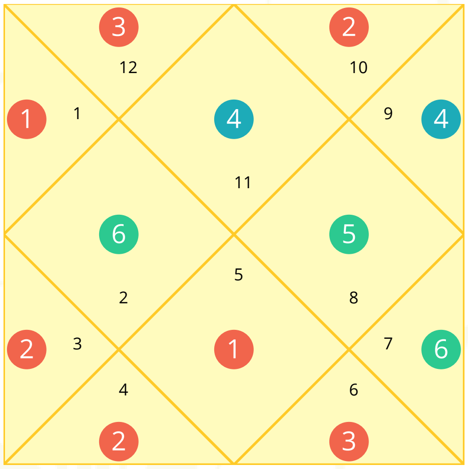
3
12
2
10
1
1
4
11
9
4
6
5
2
5
8
2
3
1
7
6
4
6
2
3

अभिप्राय

भाई-बहन

भूमि-संपत्ति

दुध?टना

विवाद

सूचक

🟩 शुभ

🟥 अशुभ

🟦 मिश्रित

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	0	1	0	1	1	0	3
वृषभ	1	1	1	1	0	0	0	1	5
मिथुन	1	0	0	0	0	0	1	0	2
कर्क	0	1	0	0	1	1	0	1	4
सिंह	0	0	1	1	0	1	0	0	3
कन्या	1	1	1	1	1	0	1	1	7
तुला	0	1	1	1	0	1	1	1	6
वृश्चिक	1	0	1	1	0	0	1	0	4
धनु	1	0	1	1	1	1	1	1	7
मकर	0	1	0	0	1	1	1	1	5
कुंभ	0	0	1	1	0	1	0	0	3
मीन	0	1	1	0	0	1	1	1	5

* * *

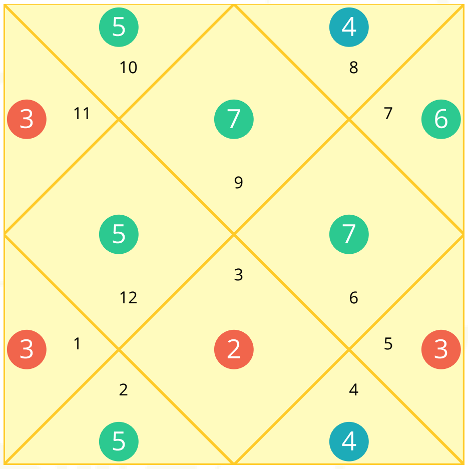
5
10
4
8
3
11
7
7
6
9
5
7
3
12
6
3
1
2
5
3
2
4
5
4

अभिप्राय

रिश्तेदार

वक्तृता

विवेकबुद्धि

शिक्षा

सूचक

🟩 शुभ

🟥 अशुभ

🟦 मिश्रित

गुरु भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	0	1	1	1	0	1	6
वृषभ	0	0	1	1	1	1	1	1	6
मिथुन	0	1	0	0	0	0	0	1	2
कर्क	1	0	0	0	0	0	1	0	2
सिंह	1	1	1	1	1	1	1	1	8
कन्या	1	0	1	1	1	1	0	1	6
तुला	1	1	0	1	0	1	0	1	5
वृश्चिक	1	0	1	0	1	0	0	0	3
धनु	0	0	1	1	1	0	0	1	4
मकर	1	1	0	1	0	1	0	1	5
कुंभ	1	0	1	0	1	0	1	0	4
मीन	1	0	1	1	1	0	0	1	5

* * *

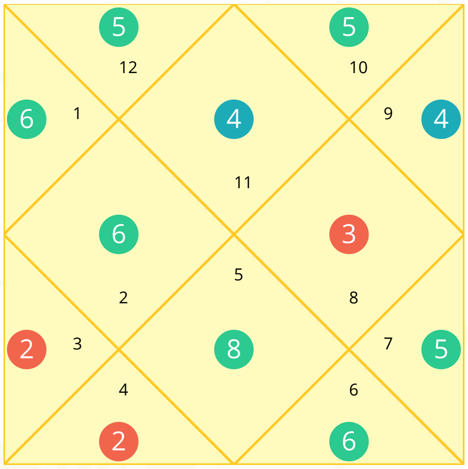
5
12
5
10
6
1
4
9
4
11
6
3
5
2
8
2
3
8
7
5
4
6
2
6

अभिप्राय

संतान
सम्मान
धार्मिक कर्म
सीखना
भाग्य

सूचक

- 🟩 शुभ
- 🟥 अशुभ
- 🟦 मिश्रित

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	1	0	1	0	1	5
वृषभ	0	0	0	1	0	0	1	0	2
मिथुन	0	0	1	0	1	0	1	0	3
कर्क	0	1	1	0	0	1	1	1	5
सिंह	1	1	0	1	0	1	0	1	5
कन्या	0	0	0	0	1	1	0	0	2
तुला	0	1	1	1	1	1	1	1	7
वृश्चिक	1	1	0	0	1	0	1	0	4
धनु	1	1	1	0	1	1	1	1	7
मकर	0	1	1	0	0	1	1	1	5
कुंभ	0	1	0	1	0	1	0	1	4
मीन	0	1	0	0	0	1	0	1	3

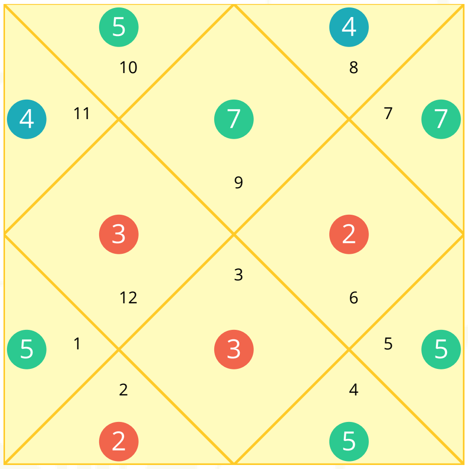
5
4
10
8
4
11
7
7
7
9
3
2
12
3
6
5
1
3
5
5
2
4
2
5

अभिप्राय

पति या पत्नी

विवाह

वाहन

आभूषण

सूचक

🟩 शुभ

🟥 अशुभ

🟦 मिश्रित

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	0	0	0	0	0	2
वृषभ	0	1	0	1	0	1	1	1	5
मिथुन	0	0	1	0	1	0	0	0	2
कर्क	1	0	1	1	1	0	1	0	5
सिंह	1	0	0	1	0	0	1	0	3
कन्या	0	0	0	1	0	0	0	1	2
तुला	1	1	0	1	0	1	0	1	5
वृश्चिक	1	0	1	1	0	1	0	0	4
धनु	0	0	1	0	1	0	0	1	3
मकर	1	0	1	0	1	0	1	0	4
कुंभ	1	1	0	0	0	0	0	1	3
मीन	0	0	0	0	0	0	0	1	1

* * *

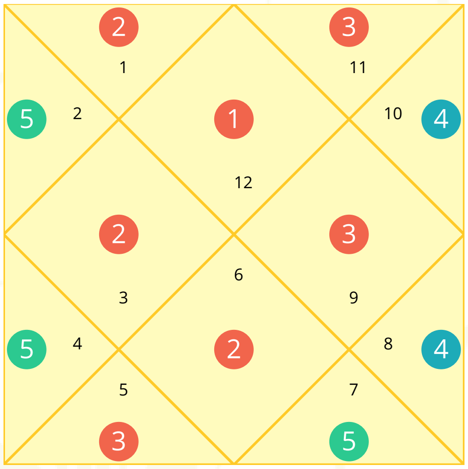
2
1
3
11
5
2
1
10
4
12
2
3
3
6
9
5
4
2
8
4
5
7
3
5

अभिप्राय

कर्मचारी

जीविका

कष्ट व शोक

सूचक

🟩 शुभ

🟥 अशुभ

🟦 मिश्रित

लग्न भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	0	0	1	0	0	3
वृषभ	0	1	0	1	1	0	1	1	5
मिथुन	1	0	0	0	1	0	1	0	3
कर्क	0	0	1	1	1	1	0	0	4
सिंह	0	0	0	0	1	1	1	0	3
कन्या	0	1	0	1	0	0	0	1	3
तुला	1	1	0	1	1	0	0	1	5
वृश्चिक	1	1	1	0	1	0	0	0	4
धनु	1	0	1	1	1	1	1	0	6
मकर	0	0	0	1	0	1	1	0	3
कुंभ	0	1	1	0	1	1	0	1	5
मीन	1	0	0	1	1	1	1	0	5

* * *

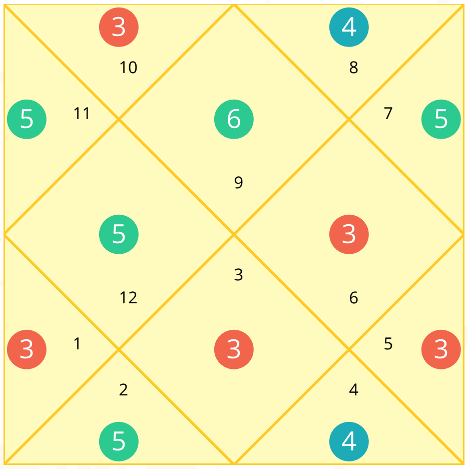
3
4
10
8
5
11
6
7
5
9
5
3
3
12
6
3
1
3
5
3
2
4
5
4

सूचक

🟩 शुभ

🟥 अशुभ

🟦 मिश्रित

सर्वाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	3	3	1	3	6	5	2	0	23
वृषभ	5	4	6	5	6	2	5	0	33
मिथुन	3	5	2	2	2	3	2	0	19
कर्क	2	4	2	4	2	5	5	0	24
सिंह	3	4	1	3	8	5	3	0	27
कन्या	6	5	3	7	6	2	2	0	31
तुला	7	6	6	6	5	7	5	0	42
वृश्चिक	6	3	5	4	3	4	4	0	29
धनु	3	4	4	7	4	7	3	0	32
मकर	2	2	2	5	5	5	4	0	25
कुंभ	5	5	4	3	4	4	3	0	28
मीन	3	4	3	5	5	3	1	0	24

* * *

सूचक

🟩 शुभ

🟥 अशुभ

🟦 मिश्रित

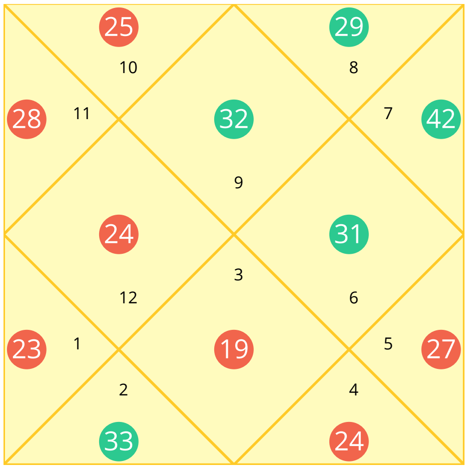
25
29
10
8
28
11
32
7
42
9
24
31
3
12
6
23
1
19
5
27
2
4
33
24

विम्शोत्तरी दशा - I

केतु

22-10-1991 13:27
22-10-1998 07:27

केतु	19-03-1992 16:54
शुक्र	19-05-1993 19:54
सूर्य	24-09-1993 16:00
चन्द्र	25-04-1994 17:30
मंगल	21-09-1994 20:57
राहु	10-10-1995 09:15
गुरु	15-09-1996 06:51
शनि	25-10-1997 02:30
बुध	22-10-1998 07:27

शुक्र

22-10-1998 07:27
22-10-2018 07:27

शुक्र	20-02-2002 19:27
सूर्य	21-02-2003 01:27
चन्द्र	21-10-2004 19:27
मंगल	21-12-2005 22:27
राहु	21-12-2008 16:27
गुरु	22-08-2011 16:27
शनि	22-10-2014 07:27
बुध	22-08-2017 04:27
केतु	22-10-2018 07:27

सूर्य

22-10-2018 07:27
21-10-2024 19:27

सूर्य	08-02-2019 21:15
चन्द्र	10-08-2019 12:15
मंगल	16-12-2019 08:21
राहु	09-11-2020 01:45
गुरु	28-08-2021 06:33
शनि	10-08-2022 06:15
बुध	16-06-2023 17:21
केतु	22-10-2023 13:27
शुक्र	21-10-2024 19:27

चन्द्र

21-10-2024 19:27
22-10-2034 07:27

चन्द्र	22-08-2025 04:27
मंगल	23-03-2026 05:57
राहु	22-09-2027 02:57
गुरु	21-01-2029 02:57
शनि	22-08-2030 10:27
बुध	21-01-2032 20:57
केतु	21-08-2032 22:27
शुक्र	22-04-2034 16:27
सूर्य	22-10-2034 07:27

मंगल

22-10-2034 07:27
22-10-2041 01:27

मंगल	20-03-2035 10:54
राहु	06-04-2036 23:12
गुरु	13-03-2037 20:48
शनि	22-04-2038 16:27
बुध	19-04-2039 21:24
केतु	16-09-2039 00:51
शुक्र	15-11-2040 03:51
सूर्य	22-03-2041 23:57
चन्द्र	22-10-2041 01:27

राहु

22-10-2041 01:27
22-10-2059 13:27

राहु	04-07-2044 05:39
गुरु	27-11-2046 20:03
शनि	03-10-2049 19:09
बुध	22-04-2052 04:27
केतु	10-05-2053 16:45
शुक्र	10-05-2056 10:45
सूर्य	04-04-2057 04:09
चन्द्र	04-10-2058 01:09
मंगल	22-10-2059 13:27

विम्शोत्तरी दशा - II

गुरु

22-10-2059 13:27
22-10-2075 13:27

गुरु	09-12-2061 18:15
शनि	22-06-2064 01:27
बुध	27-09-2066 23:03
केतु	03-09-2067 20:39
शुक्र	04-05-2070 20:39
सूर्य	21-02-2071 01:27
चन्द्र	22-06-2072 01:27
मंगल	28-05-2073 23:03
राहु	22-10-2075 13:27

शनि

22-10-2075 13:27
22-10-2094 07:27

शनि	25-10-2078 08:30
बुध	04-07-2081 11:39
केतु	13-08-2082 07:18
शुक्र	12-10-2085 22:18
सूर्य	24-09-2086 22:00
चन्द्र	25-04-2088 05:30
मंगल	04-06-2089 01:09
राहु	10-04-2092 00:15
गुरु	22-10-2094 07:27

बुध

22-10-2094 07:27
23-10-2111 13:27

बुध	19-03-2097 22:54
केतु	17-03-2098 03:51
शुक्र	16-01-2101 00:51
सूर्य	22-11-2101 11:57
चन्द्र	23-04-2103 22:27
मंगल	20-04-2104 03:24
राहु	07-11-2106 12:42
गुरु	12-02-2109 10:18
शनि	23-10-2111 13:27

वर्त्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	चन्द्र	21-10-2024 19:27	22-10-2034 07:27
अंतर्दशा	चन्द्र	21-10-2024 19:27	22-08-2025 04:27
प्रत्यंतर दशा	मंगल	16-11-2024 04:12	03-12-2024 22:20
सूक्ष्म दशा	चन्द्र	02-12-2024 10:49	03-12-2024 22:20

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

योगिनी दशा - I

उल्का (6 वर्ष)

13-9-1992 12:23
13-9-1998 12:23

उल्का	13-9-1993 18:23
सिद्धि	13-11-1994 21:23
संकटा	14-3-1996 21:23
मंगला	14-5-1996 18:23
पिंगला	13-9-1996 12:23
धान्य	15-3-1997 3:23
भ्रामरी	13-11-1997 15:23
भद्रिका	13-9-1998 12:23

सिद्धि (7 वर्ष)

13-9-1998 12:23
13-9-2005 12:23

सिद्धि	23-1-2000 15:53
संकटा	13-8-2001 19:53
मंगला	23-10-2001 20:23
पिंगला	14-3-2002 21:23
धान्य	13-10-2002 22:53
भ्रामरी	25-7-2003 0:53
भद्रिका	14-7-2004 3:23
उल्का	13-9-2005 12:23

संकटा (8 वर्ष)

13-9-2005 12:23
13-9-2013 12:23

संकटा	24-6-2007 20:23
मंगला	14-9-2007 0:23
पिंगला	23-2-2008 8:23
धान्य	23-10-2008 20:23
भ्रामरी	13-9-2009 12:23
भद्रिका	24-10-2010 8:23
उल्का	23-2-2012 8:23
सिद्धि	13-9-2013 12:23

मंगला (1 वर्ष)

13-9-2013 12:23
13-9-2014 12:23

मंगला	23-9-2013 15:53
पिंगला	13-10-2013 22:53
धान्य	13-11-2013 9:23
भ्रामरी	23-12-2013 23:23
भद्रिका	12-2-2014 16:53
उल्का	14-4-2014 13:53
सिद्धि	24-6-2014 14:23
संकटा	13-9-2014 12:23

पिंगला (2 वर्ष)

13-9-2014 12:23
13-9-2016 12:23

पिंगला	24-10-2014 2:23
धान्य	23-12-2014 23:23
भ्रामरी	15-3-2015 3:23
भद्रिका	24-6-2015 14:23
उल्का	24-10-2015 8:23
सिद्धि	14-3-2016 9:23
संकटा	23-8-2016 17:23
मंगला	13-9-2016 12:23

धान्य (3 वर्ष)

13-9-2016 12:23
13-9-2019 12:23

धान्य	13-12-2016 19:53
भ्रामरी	14-4-2017 13:53
भद्रिका	13-9-2017 18:23
उल्का	15-3-2018 9:23
सिद्धि	14-10-2018 10:53
संकटा	14-6-2019 22:53
मंगला	15-7-2019 9:23
पिंगला	13-9-2019 12:23

योगिनी दशा - II

भ्रामरी (4 वर्ष)

13-9-2019 12:23
13-9-2023 12:23

भ्रामरी	22-2-2020 20:23
भद्रिका	12-9-2020 18:23
उल्का	14-5-2021 6:23
सिद्धि	22-2-2022 8:23
संकटा	13-1-2023 0:23
मंगला	22-2-2023 14:23
पिंगला	14-5-2023 18:23
धान्य	13-9-2023 12:23

भद्रिका (5 वर्ष)

13-9-2023 12:23
13-9-2028 12:23

भद्रिका	24-5-2024 3:53
उल्का	24-3-2025 12:53
सिद्धि	14-3-2026 15:23
संकटा	24-4-2027 11:23
मंगला	14-6-2027 4:53
पिंगला	23-9-2027 15:53
धान्य	22-2-2028 20:23
भ्रामरी	13-9-2028 12:23

उल्का (6 वर्ष)

13-9-2028 12:23
13-9-2034 12:23

उल्का	13-9-2029 18:23
सिद्धि	13-11-2030 21:23
संकटा	14-3-2032 21:23
मंगला	14-5-2032 18:23
पिंगला	13-9-2032 12:23
धान्य	15-3-2033 3:23
भ्रामरी	13-11-2033 15:23
भद्रिका	13-9-2034 12:23

सिद्धि (7 वर्ष)

13-9-2034 12:23
13-9-2041 12:23

सिद्धि	23-1-2036 15:53
संकटा	13-8-2037 19:53
मंगला	23-10-2037 20:23
पिंगला	14-3-2038 21:23
धान्य	13-10-2038 22:53
भ्रामरी	25-7-2039 0:53
भद्रिका	14-7-2040 3:23
उल्का	13-9-2041 12:23

संकटा (8 वर्ष)

13-9-2041 12:23
13-9-2049 12:23

संकटा	24-6-2043 20:23
मंगला	14-9-2043 0:23
पिंगला	23-2-2044 8:23
धान्य	23-10-2044 20:23
भ्रामरी	13-9-2045 12:23
भद्रिका	24-10-2046 8:23
उल्का	23-2-2048 8:23
सिद्धि	13-9-2049 12:23

मंगला (1 वर्ष)

13-9-2049 12:23
13-9-2050 12:23

मंगला	23-9-2049 15:53
पिंगला	13-10-2049 22:53
धान्य	13-11-2049 9:23
भ्रामरी	23-12-2049 23:23
भद्रिका	12-2-2050 16:53
उल्का	14-4-2050 13:53
सिद्धि	24-6-2050 14:23
संकटा	13-9-2050 12:23

योगिनी दशा - III

पिंगला (2 वर्ष)

13-9-2050 12:23
13-9-2052 12:23

पिंगला	24-10-2050 2:23
धान्य	23-12-2050 23:23
भ्रामरी	15-3-2051 3:23
भद्रिका	24-6-2051 14:23
उल्का	24-10-2051 8:23
सिद्धि	14-3-2052 9:23
संकटा	23-8-2052 17:23
मंगला	13-9-2052 12:23

धान्य (3 वर्ष)

13-9-2052 12:23
13-9-2055 12:23

धान्य	13-12-2052 19:53
भ्रामरी	14-4-2053 13:53
भद्रिका	13-9-2053 18:23
उल्का	15-3-2054 9:23
सिद्धि	14-10-2054 10:53
संकटा	14-6-2055 22:53
मंगला	15-7-2055 9:23
पिंगला	13-9-2055 12:23

भ्रामरी (4 वर्ष)

13-9-2055 12:23
13-9-2059 12:23

भ्रामरी	22-2-2056 20:23
भद्रिका	12-9-2056 18:23
उल्का	14-5-2057 6:23
सिद्धि	22-2-2058 8:23
संकटा	13-1-2059 0:23
मंगला	22-2-2059 14:23
पिंगला	14-5-2059 18:23
धान्य	13-9-2059 12:23

भद्रिका (5 वर्ष)

13-9-2059 12:23
13-9-2064 12:23

भद्रिका	24-5-2060 3:53
उल्का	24-3-2061 12:53
सिद्धि	14-3-2062 15:23
संकटा	24-4-2063 11:23
मंगला	14-6-2063 4:53
पिंगला	23-9-2063 15:53
धान्य	22-2-2064 20:23
भ्रामरी	13-9-2064 12:23

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

चर दशा

धनु (2 वर्ष)

26-1-1998
26-1-2000

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044
कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046
धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

वृश्चिक (3 वर्ष)

26-1-2000
26-1-2003

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044
कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046
धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

तुला (2 वर्ष)

26-1-2003
26-1-2005

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044
कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046
धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

कन्या (9 वर्ष)

26-1-2005
26-1-2014

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044
कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046

सिंह (7 वर्ष)

26-1-2014
26-1-2021

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044
कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046

कर्क (7 वर्ष)

26-1-2021
26-1-2028

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044
कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046

धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

मिथुन (6 वर्ष)

26-1-2028
26-1-2034

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044
कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046
धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

वृष (7 वर्ष)

26-1-2034
26-1-2041

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044
कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046
धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

मेष (10 वर्ष)

26-1-2041
26-1-2051

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044
कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046
धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

मीन (1 वर्ष)

26-1-2051
26-1-2052

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044

कुम्भ (11 वर्ष)

26-1-2052
26-1-2063

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044

मकर (10 वर्ष)

26-1-2063
26-1-2073

वृष	26-11-2041
मिथुन	26-9-2042
कर्क	26-7-2043
सिंह	26-5-2044

कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046
धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046
धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

कन्या	26-3-2045
तुला	26-1-2046
वृश्चिक	26-11-2046
धनु	26-9-2047
मकर	26-7-2048
कुम्भ	26-5-2049
मीन	26-3-2050
मेष	26-1-2051

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त	कुलिक	वासुकी	शंखपाल
पद्म	महापद्म	तक्षक	कर्कोटक
शंखचूड़	घातक	विषधर	शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

☹

कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में अनुदित रूप में कालसर्प दोष विद्यमान है।

आपको कुंडली में कालसर्प दोष आंशिक रूप से विद्यमान है।

कालसर्प नाम

शंखचूड़

दिशा

आंशिक अनुदित

कालसर्प दोष का प्रभाव

कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग बन रहा है।
केतु तीसरे स्थान में व राहु नवम स्थान में शंखचूड़ नामक कालसप्र योग बनता है। इस योग से पीड़ित जातकों का भाग्योदय होने में अनेक प्रकार की अड़चने आती रहती हैं। व्यावसायिक प्रगति, नौकरी में प्रोन्नति तथा पढ़ाई-लिखाई में वांछित सफलता मिलने में जातकों को कई प्रकार के विघ्नों का सामना करना पड़ता है। इसके पीछे कारण वह स्वयं होता है क्योंकि वह अपनो का भी हिस्सा छिनना चाहता है। अपने जीवन में धर्म से खिलवाड़ करता है। इसके साथ ही उसका अपना अत्याधिक आत्मविश्वास के कारण यह सारी समस्या उसे झेलनी पड़ती है। अधिक सोच के कारण शारीरिक व्याधियां भी उसका पीछा नहीं छोड़ती। इन सब कारणों के कारण सरकारी महकमों व मुकदमेंबाजी में भी उसका धन खर्च होता रहता है। उसे पिता का सुख तो बहुत कम मिलता ही है, वह ननिहाल व बहनोइयों से भी छला जाता है। उसके मित्र भी धोखाबाजी करने से बाज नहीं आते। उसका वैवाहिक जीवन आपसी वैमनस्यता की भेंट चढ़ जाता है। उसे हर बात के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है। उसे समाज में यथेष्ट मान-सम्मान भी नहीं मिलता।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें ।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंर्तदशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नम: शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	**27.75%**

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है और प्रभावी है, मिलान के समय इसका ध्यान रखे। आप मांगलिक हैं ।

मांगलिक विश्लेषण - II

भाव के आधार पर

सूर्य द्वितीय भाव में कुंडली में स्थित है।

शनि चतुर्थ भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

दृष्टि के आधार पर

सप्तम भाव केतु से दृष्ट है।

राहु , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को शनि देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को राहु देख रहा है।

सूर्य , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |
- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |
- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |
- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |
- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |
- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |
- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |
- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

पितृ दोष फल

पितृ दोष क्या होता है ?

पितृ दोष पूर्वजों की एक कार्मिक ऋण है और ग्रहों के संयोजन के रूप में जन्म कुंडली में परिलक्षित होता है। यह पूर्वजों की उपेक्षा के कारण भी होता है और श्राद्ध या दान या आध्यात्मिक उत्थान का यथोचित प्रबंध न करने के कारण भी पितृ दोष हो सकता है।

पितृ दोष विश्लेषण

क्या पितृ दोष आपकी कुंडली में उपस्थित है ?	**नहीं**

जिन नियमों पर हमने आपकी कुंडली परखी है उसके अनुसार आप पितृ दोष से मुक्त हैं।

साढ़ेसाती विश्लेषण - I

साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है

साढ़ेसाती दोष उपस्थित नहीं है।

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनाकं	3-12-2024
शनि राशि	कुम्भ
चंद्र राशि	धनु
वक्री शनि	**नहीं**

साढ़ेसाती विश्लेषण - II

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
धनु	वृश्चिक	--	उदय प्रारम्भ	2-11-2014	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
धनु	धनु	--	शिखर प्रारम्भ	27-1-2017	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
धनु	धनु	हाँ	उदय प्रारम्भ	21-6-2017	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
धनु	धनु	--	शिखर प्रारम्भ	26-10-2017	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
धनु	मकर	--	अस्त प्रारम्भ	24-1-2020	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
धनु	कुम्भ	--	अस्त समाप्त	29-4-2022	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
धनु	कुम्भ	हाँ	अस्त प्रारम्भ	12-7-2022	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
धनु	कुम्भ	--	अस्त समाप्त	17-1-2023	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
धनु	वृश्चिक	--	उदय प्रारम्भ	12-12-2043	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
धनु	वृश्चिक	हाँ	उदय समाप्त	23-6-2044	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
धनु	वृश्चिक	--	उदय प्रारम्भ	30-8-2044	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
धनु	धनु	--	शिखर प्रारम्भ	8-12-2046	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
धनु	मकर	--	अस्त प्रारम्भ	6-3-2049	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
धनु	मकर	हाँ	शिखर प्रारम्भ	9-7-2049	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
धनु	मकर	--	अस्त प्रारम्भ	4-12-2049	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
धनु	कुम्भ	--	अस्त समाप्त	25-2-2052	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
धनु	वृश्चिक	--	उदय प्रारम्भ	5-2-2073	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
धनु	वृश्चिक	हाँ	उदय समाप्त	30-3-2073	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
धनु	वृश्चिक	हाँ	उदय समाप्त	1-4-2073	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
धनु	वृश्चिक	--	उदय प्रारम्भ	23-10-2073	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
धनु	धनु	--	शिखर प्रारम्भ	16-1-2076	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
धनु	धनु	हाँ	उदय प्रारम्भ	10-7-2076	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
धनु	धनु	--	शिखर प्रारम्भ	12-10-2076	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
धनु	मकर	--	अस्त प्रारम्भ	14-1-2079	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
धनु	मकर	--	अस्त प्रारम्भ	15-1-2079	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
धनु	कुम्भ	--	अस्त समाप्त	12-4-2081	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
धनु	कुम्भ	हाँ	अस्त प्रारम्भ	3-8-2081	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
धनु	कुम्भ	--	अस्त समाप्त	7-1-2082	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।

साढ़े सती उपाय

- साढ़ेसाती के अनिष्ट प्रभावों को काम करने के उपाय निम्नलिखित है -

- साढ़े साती की परेशानी से बचने के लिए नियमित हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

- इस ग्रह दशा से बचने के लिए काले घोड़े की नाल की अंगूठी बनाकर उसे दाएं हाथ की मध्यमा उंगली में पहनना चाहिए।

- शनि देव को शनिवार के दिन सरसों का तेल और तांबा भेट करना चाहिए।

- किसी गरीब व्यक्ति को काले कंबल का दान करें।

- शिवलिंग पर काले तिल अर्पित करें और जल चढ़ाएं।

- हर मंगलवार और शनिवार ऊँ रामदूताय नमः मंत्र का जप करें। मंत्र जप की संख्या कम से कम 108 करे।

- धार्मिक आचरण बनाए रखें और किसी का अनादर न करें।

- हर शनिवार को शनि के निमित्त तेल का दान करें। तेल दान करने से पहले तेल में अपना चेहरा देख लेना चाहिए। यह उपाय हर शनिवार किया जाना चाहिए।

- शनि बीज मंत्र - ◌ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः प्रतिदिन 108 बार अवश्य करें

- शनि प्रकोप से मुक्ति के लिए सुंदर काण्ड का नियमित पाठ अवश्य करें।

- रोटी में तेल लगाकर कुत्ते या कौए को खिलाएं।

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

पुखराज

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

मूंगा

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

माणिक्य

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

जीवन रत्न

जीवन रत्न - पुखराज

विकल्प	टोपाज	**दिन**	गुरुवार
उंगली	तर्जनी	**अधिदेवता**	गुरु
भार	4 - 5.25 कैरेट	**धातु**	स्वर्ण

विवरण

पुखराज रत्न का स्वामी ग्रह बृहस्पति (गुरु) है । शुद्ध पुखराज दोषरहित , चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता हैं । पुखराज धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, ज्ञान, संपत्ति, दीर्घायु, नाम, सम्मान और यश की प्राप्ति होती है । यह बुरी आत्माओं के कुप्रभाव से भी रक्षा करता है ।

भार व धातु

पुखराज का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए; परंतु ६, ११ अथवा १९ कैरेट का न हो इस बात का ध्यान रखें । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पुखराज रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार की सुबह धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पुखराज धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

◌ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पुखराज की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पुखराज को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

पुखराज के स्थान पर पीला मोती, पीला जिक्रोन, पीली तूरमली, टोपाज़ और सिट्रीन (क्वार्ट्ज टोपाज़) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पुखराज को हीरे, नीलम, गोमेद और लहसुनिया के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत्न

कारक रत्न - मूंगा

विकल्प	लाल सुलेमानी	**दिन**	मंगलवार
उंगली	तर्जनी	**अधिदेवता**	मंगल
भार	6 - 10.25 कैरेट	**धातु**	स्वर्ण

विवरण

लाल मूंगा का स्वामी ग्रह मंगल है । लाल मूंगा व्यक्ति को साहसी बनाता है और उसकी अपने दुश्मनों को पछाड़ने में सहायता करता है । लाल मूंगा दुष्ट आत्माओं, जादू-टोना और बुरे स्वप्नों से बचाता है ।

भार व धातु

लाल मूंगा का वजन ६ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

लाल मूंगा रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी मंगलवार को सूर्योदय के एक घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । लाल मूंगा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

लाल मूंगा की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, लाल मूंगे की अंगूठी को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

लाल मूंगा के स्थान पर संग मुंगी (संग-सितारा), कार्नेलियन और रेड जास्पर (सूर्यकांत मणि) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि लाल मूंगे को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

भाग्य रत्न

भाग्य रत्न - माणिक्य

विकल्प	लाल गार्नेट	**दिन**	रविवार
उंगली	अनामिका	**अधिदेवता**	सूर्य
भार	3 - 4.25 कैरेट	**धातु**	स्वर्ण

विवरण

माणिक रत्न का स्वामी ग्रह सूर्य है । शुद्ध माणिक दोषरहित , चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता हैं । माणिक धारण करने से उत्तम धन और संपत्ति की प्राप्ति होती है । इससे इच्छा शक्ति और आत्मा को प्रबलता मिलती है । माणिक धारण करने वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है और समाज में उच्च तथा प्रतिष्ठित पद पर विराजमान होता है।

भार व धातु

वजन में कम से कम २ -१/२ कैरेट का दोषरहित माणिक पहना जाना चाहिए । सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में रत्न को जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

माणिक रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी रविवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । माणिक धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

◌ॐ सूर्याय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, माणिक को अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

माणिक के स्थान पर लाल स्पिनेल, स्टार रूबी, पाइरप गार्नेट(तामड़ा), लाल ज़िर्कन या लाल तूरमली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि माणिक को हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

रुद्राक्ष फल

ग्यारह मुखी रुद्राक्ष

आपको ग्यारह मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की सलाह दी जाती है।

ग्यारह मुखी रुद्राक्ष एकादस महा रुद्र का प्रतीक माना जाता है। ग्यारह मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से आप पर शिवजी की कृपा बानी रहेगी और आपके वैवाहिक जीवन में खुशहाली आएगी, पति की लम्बी उम्र तथा संतान की उत्तपत्ति हेतु स्त्रियां इसे धारण कर सकती है।

शुभाशुभ अंक

9	8	9
भाग्यांक	**मूलांक**	**नामांक**

आपका नाम	सैम्पल
जन्म दिनांक	26-1-1998
मूलांक	8
मूलांक स्वामी	शनि
मित्र अंक	2,1,4
सम अंक	3,7,9
शत्रु अंक	3,6
शुभ दिन	रविवार, सोमवार,शनिवार
शुभ रत्न	नीलमणि
शुभ उपरत्न	जमुनिया, नीला तुरमली
शुभ देवता	भैरव
शुभ धातु	लोहा
शुभ रंग	काला
शुभ मंत्र	|| ओम शंग शनिश्चराय नमः ||

आपके बारे में

आपका मूलांक आठ है। मूलांक आठ का स्वामी शनि ग्रह है। शनि के प्रभाव से आप अपने जीवन में धीरे धीरे उन्नति प्राप्त करेंगे। व्यवधानों, कठिनाइयों से जुझते हुए सफलता प्राप्त करना आपकी प्रकृति में रहेगा। असफलताओं से आप घबड़ायेंगे नहीं। कभी कभी निराश के भाव अवश्य आ जाया करेंगे। आलस्य आपका सबसे बड़ा शत्रु रहेगा और यही आलस्य आपकी असफलता का कारण रहेगा। अतः किसी भी कार्य को कल पर न टालें। जीवन में शनि ग्रह के प्रभाववश आप काफी महत्वपूर्ण कार्य करेंगे, जिससे आपको नाम , यश , कीर्ति प्राप्त होगी। आपकी कार्यशैली को हर कोई समझ नै पायेगा , इससे आपके विरोधी भी उत्पन्न होंगे। आपके अंदर दिखावे की प्रवृत्ति कम रहेगी। इस कारण आपको कुछ लोग रुखा, शुष्क और कठोर हृदय समझेंगे। जबकि अन्दर से आप काफी भायुक एवं दयालु हृदय के होंगे। आप अधिकांश समय में अपने काम से ही मतलब रखेंगे एवं आपकी कोशिश रहेगी कि काम में ही लगे रहें। लेकिन आपके इस व्यवहार के कारण आपके आलोचक भी अधिक रहेंगे। आपके अन्दर त्याग की भावना अधिक रहेगी एवं श्रम में कभी पीछे नहीं हटेंगे। किसी भी कार्य में कितना भी श्रम, त्याग या बलिदान लगे आप पीछे नहीं हटेंगे। इसी कारण रुकावटों को पार करते हुए आप अपनी मंजिल अवश्य प्राप्त करेंगे। शनि प्रभावी व्यक्ति संघर्ष शील एवं परिश्रमी होते हैं। एवं विघ्नों को पार करते हुए उन्नति करने के कारण इनको सफलता देर से लेकिन स्थायी प्राप्त होती है।

शुभ व्रत समय

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

शुभ देवता

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

शुभ गायत्री मंत्र

आपके लिए शनि के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शनि के गायत्री मंत्र का, प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। शनि गायत्री मंत्र - ||ऊँ भगभवाय विùहे मृत्युरुपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

शुभ ध्यान समय

प्रातःकाल उठ कर आप शनि का ध्यान करें, मन में शनि की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें: | नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

शुभ मंत्र

अशुभ शनि को अनुकूल बनाने हेतु शनि के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान दो सौ तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे। ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।। जप संख्या 23000।।

आपके के लिए शुभ समय

सूर्य दिनांक २३ दिसंबर से १९ फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता है तथा १४ जनवरी से १३ मार्च तक, भारतीय मत से, सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है जो शनि की अपनी राशियां है तथा १७ अक्टूबर से १३ नवम्बर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहेंगे।

शुभ वास्तु

सूर्य दिनांक २३ दिसंबर से १९ फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता है तथा १४ जनवरी से १३ मार्च तक, भारतीय मत से, सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है जो शनि की अपनी राशियां है तथा १७ अक्टूबर से १३ नवम्बर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहेंगे।

लग्न फल - धनु

स्वामी	गुरु
प्रतीक	धनुष
विशेषताएँ	अग्नि तत्त्व, द्विस्वभाव, पूर्व
भाग्यशाली रत्न	माणिक्य
व्रत का दिन	गुरुवार

देहं रुपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||

धनु लग्न के व्यक्ति आदर्शवादी महत्वाकांक्षी, उत्साही, धार्मिक या नास्तिक, दूर के स्थानों और संस्कृतियों या विचारों में रूचि रखने वाले,, शारीरिक रुप से सक्रिय, जोखिम लेने वाले , पर्यटनशील , प्रसन्नचित्त , बहिर्मुखी, दार्शनिक, कदाचित सिद्धांतवादी, पूर्वाग्रही,सतही ,अच्छे अवसरों की तलाश में और अत्यधिक सक्रिय रहने वाले होते हैं ।

धनु, लग्न की छवि आधे मानव आधे जानवर की है और शायद आप का स्वभाव भी वैसा है । आप अति महत्वाकांक्षी है, तथापि आपका स्वभाव सबसे अनियंत्रित इच्छा प्रकृति का हो सकता है। आप जीवन में अपना लक्ष्य या तो बहुत ऊंचा रखेंगे या अधम कार्य भी कर सकते हैं।

> “ पशुओं से प्रेम ,मैदानी खेल,खेलकूद , जुआ, साहसिक कार्यों में, और यात्रा में आपकी रुचि रहेगी । आप में एकाग्रता की कमी हो सकती है। आपके परिचित शायद बहुत से होंगे लेकिन दोस्त उनमें से कुछेक ही होंगे ।

आपका रुझान गहराई के रिश्तों की अपेक्षा अनौपचारिक संपर्क बनाने में रहेगा । आप बहुत अधिक अधीर स्वभाव के हैं और सदैव गतिमान रहना पसंद करते हैं ।

आप हमेशा अच्छे अवसरों की तलाश में रहते हैं,लेकिन ना कभी रुकते हैं ना धीरे चलते हैं और ना ही अपने आसपास देखते हैं । धनु लग्न के व्यक्ति मुखर होते हैं और स्पष्ट सीधी बात करते हैं ।

आप की स्पष्टवादिता वजह से आप में निपुणता और कूटनीति की कमी हो सकती है। अवधारणाओं को आप बहुत बहुत महत्व देते हैं। आप आम तौर पर परिस्थिति की पूर्णता को पसंद करते है और हर तरह की कम जानकारी आपको नापसंद हैं।

> आप वादे बहुत करते हैं लेकिन उन्हे पूरा करने के इरादे आप के मन में कम हो सकते है। आप या तो जीवन में बहुत ऊँचाईयों को छुएंगे या पतन की राह पर भी जा सकते हैं । आप इनमे से क्या चुनेंगे ? बृहस्पति धनु लग्न का स्वामी है अतः बृहस्पति आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण होगा ।

ॐ

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

संयम,जो भी सामने आये(और इसमे विलम्ब ना करें)

सकारात्मक लक्षण

- क्रियाशील
- प्रसन्नचित
- मानवीय
- भगवान से डरने वाले

नकारात्मक लक्षण

- चंचल
- अनिर्णायक
- उद्विग्न
- बेपरवाह

आपकी कुंडली में ग्रहों का विश्लेषण

सूर्य

ज्योतिष के अनुसार सूर्य को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है, यह जीवन का स्त्रोत है।सूर्य को स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, ऊर्जा, शक्ति, पिता, सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, प्रसिद्धि, साहस और व्यक्तिगत शक्ति काकारक कहा जाता है।

आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
मकर	**11:56:21**	**श्रावण - 1**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
नौवां भाव	**दूसरा भाव**	**नहीं / वृद्ध**

सूर्य आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में सूर्य दूसरा भाव में एवं मकर राशि में स्थित है।

आपका चेहरा उज्ज्वल, ओजस्वी और चरित्र से भरा है. आप अपनी ऊर्जा का प्रयोग व्यक्तिगत संपत्ति, प्रतिभा और पैसो द्वारा सत्ता पाने की इच्छापूर्ति के लिए कर सकते हैं. आप एक बुद्धिजीवी हैं और आपकी आवाज काफी प्रभावशाली है . आप आत्म निर्भर हैं और हस्तकला में कुशल हैं. आप उदार और महत्वाकांक्षी तो हैं, लेकिन फ़िज़ूलखर्ची से बचें. लोगों और चीजों पर स्वत्वबोध अधिकार या प्रभुत्व जताने की प्रवृत्ति से दूर रहें. आपके व्यक्तित्व को सबसे अच्छी अभिव्यक्ति मानवीय संबंधों में ही मिलेगी . आप स्वभाव से जिद्दी और चिड़चिड़े हैं. आप बुद्धिमानी से अपने पैसे खर्च करते है और थोड़े से कंजूस भी हैं

> “ आप परंपराओं में विश्वास रखते हैं

आपके व्यक्तित्व की कर्मशक्ति मुख्य रूप से वित्तीय सुरक्षितता के साथ, निजी संपत्ति के निर्माण की ओर निर्देशित हैं . आप अपने परिवार की खुशी और सुरक्षा के बारे में परवाह करते है और उनकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए कुछ भी करेंगे. स्त्री के कारण परिवार में क्लेश होने की संभावना है . निकटतम परिवारजनों के साथ संबंध असंतोषजनक हो सकते हैं. वाणी से संबंधित कुछ समस्या हो सकती है. कड़वे वचन बोलने से बचें . नेत्र-कर्ण-दन्त रोगों से सावधान रहें.भौतिक धन और संपत्ति आप के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं

आप खाद्य संबंधित व्यापार में यशस्वी हो सकते हैं. आप को निवेश, मनोरंजन और बच्चों के माध्यम से लाभ होगा. राजकीय अधिकारियों को अप्रसन्न करने पर नुक्सान होगा. आप अपने परिश्रम से आजीविका कमाते हैं . आमदनी सामान्य होगी. पैसा जितनी आसानी से आता है उतनी ही आसानी से चला भी जाता है.घरेलू झगड़े से दूर रहें . महिलाओं का सम्मान करें; तेल और नारियल का दान करें

सूर्य मंत्र	**|| ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः ||**

चंद्र

चंद्रमा में मन, शक्ति और भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता है। चंद्रमा पानी और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ा हुआ है,यह एक ढुलमुल ग्रह है जो परिवर्तनों से संबंधित है। चंद्रमा भावनाओं, कल्पना, माता, हृदय, स्मृति, नींद, यात्रा, इच्छा, बचपन, बुद्धि से सम्बंधित है। चंद्रमा व्यक्ति कीइच्छाओं और पसंद से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में चन्द्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
धनु	**11:55:47**	**मूल - 4**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
आठवाँ भाव	**पहला भाव**	**नहीं / कुमार**

चन्द्र आपकी कुंडली मे सम है

आपके जन्मपत्रिका में चन्द्र पहला भाव में एवं धनु राशि में स्थित है।

आप गोल चेहरे, उज्ज्वल आँखें और स्वप्नमयी अभिव्यक्ति वाले व्यक्ति हैं. आप दिखने में बहुत आकर्षक तथा सौम्य हैं, लेकिन मानसिक रूप से अति भावुक और संवेदनशील हैं. यही मनोभाव आप में हिचकिचाहट, अनिश्चितता और असुरक्षा की भावनाएं उत्पन्न कर सकते हैं. आप अपने व्यक्तित्व के प्रति बहुत सजग हैं. लोग आप के बारे में क्या कहते हैं या सोचते हैं - इस बात की आप बहुत ज्यादा चिंता करते हैं. आप मूल रूप से बहुत जज़्बाती, कल्पनाशील और दूसरों की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं . आप का दृष्टिकोण बहुत ही रुमानी और विलक्षण हैं

> “ अस्थिरता और चंचलता आप की पहचान हैं

इस कारण आप में रचनात्मकता और कलात्मक का एक अनूठा मेल बनता है.आप की परवरिश पर आपकी माता का बहुत प्रभाव रहा हैं . अतएव आपके व्यक्तित्व और पहचान पर माँ द्वारा दिए गए मूल्यों की छाप स्पष्ट दिखती है. आप अपने परिवार के प्रति बहुत समर्पित और निष्ठावान हैं. आप बाहरी रूप से सफल और सक्षम व्यक्ति हो सकते हैं; लेकिन भावनात्मक स्तर पर आपको लगातार आश्वासन की जरूरत पड़ती है. आप आसानी से अपने आसपास के लोगों

से प्रभावित हो जाते हैं.आप घूमने-फिरने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं

चंचल प्रकृति होने के कारण आप लगातार अपने पर्यावरण व व्यवसाय बदलने के प्रयास करते रहते हैं. आप को ऐसे पेशे में सफलता मिलेगी जहाँ आपको लोगों के साथ निकट संपर्क में रहने का अवसर मिलें . कारोबार में आपकी बुद्धि काफी कुशाग्र है . आप को कोई ऐसा काम या व्यवसाय चुनना चाहिए जहाँ आप को अपने भीतर की विशिष्टता को अभिव्यक्त करने के अवसर प्राप्त हों .चांदी के बर्तन में पानी या दूध का सेवन करें. कांच के बने बर्तन का प्रयोग न करें. उम्र के २४वें वर्ष के बाद ही विवाह करें

चंद्र मंत्र	**|| ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ||**

मंगल

ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह हिम्मत और तानाशाही से सम्बंधित है। मंगल ग्रह को कार्य और विस्तार का ग्रह माना जाता है। मंगल, शक्ति, साहस, क्रोध, दुश्मन, हिंसा, छोटे भाई, बल, मांसपेशियों और वीरता से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि
कुम्भ

अंश
06:36:40

नक्षत्र
धनिष्ठा - 4

स्वामी
पाँचवा ,बारहवां भाव

भाव में
तिसरा भाव

अस्त/अवस्था
नहीं / कुमार

मंगल आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में मंगल तिसरा भाव में एवं कुम्भ राशि में स्थित है।

आप अधीर और अतिसंवेदनशील व्यक्ति हैं, अपितु आप में मानसिक ऊर्जा की बहुतायत है. आप को अपने विचारों पर पूरा विश्वास है . आप शक्तिशाली, ऊर्जावान और साहसी हैं . आप किसी के साथ किसी भी बात पर समझौता नहीं करते. अपनी प्रशंसा और सराहना कराने के लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं . आप को हर काम में सफलता प्राप्त होगी. आप सचेत, दृढ़ संकल्पी और उत्साही हैं. आपकी विश्लेषणात्मक सोच काफी विकसित है; आवेगी विचारों से बचें . आप हमेशा नवप्रवर्तनशील रहते हैं . आप काम करने के नए तरीकों की खोज में लगे रहते हैं. आप अच्छी शिक्षा पायेंगें; आपको कई भाषाओं का ज्ञान होगा . आप भी गणित में भी निपुण हैं

> “ आप बहुत साहसी और आत्मविश्वासी हैं

आप अधीर और अतिसंवेदनशील व्यक्ति हैं, अपितु आप में मानसिक ऊर्जा की बहुतायत है. आप को अपने विचारों पर पूरा विश्वास है . आप बहुत साहसी और आत्मविश्वासी हैं . आप शक्तिशाली, ऊर्जावान और साहसी हैं . आप किसी के साथ किसी भी बात पर समझौता नहीं करते. अपनी प्रशंसा और सराहना कराने के लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं . आप को हर काम में सफलता प्राप्त होगी. आप सचेत, दृढ़ संकल्पी और उत्साही हैं. आपकी विश्लेषणात्मक

सोच काफी विकसित है; आवेगी विचारों से बचें . आप हमेशा नवप्रवर्तनशील रहते हैं . आप काम करने के नए तरीकों की खोज में लगे रहते हैं. आप अच्छी शिक्षा पायेंगें; आपको कई भाषाओं का ज्ञान होगा

आप भी गणित में भी निपुण हैं .आपका पारिवारिक और सामाजिक जीवन खुशहाल और आनंददायक रहेगा. आप के अपने भाई बहनों के साथ शांतिपूर्ण संबंध होंगें . आप को तरह तरह प्रकार के भोजन खाना पसंद हैं. हालांकि, आप को अपने आहार पर नियंत्रण रखना होगा . आप रक्त, रक्तचाप, हड्डीयों, तेज बुखार, दांत से संबंधित परेशानियों से पीड़ित हो सकते हैं .कई छोटी यात्राएं होंगीं . आपकी क्रूर और झगड़ालू प्रकृति की वजह से लोग आप से नफरत कर सकते हैं . अति वाद विवाद से बचें .अपनी आवाज पर नियंत्रण रखें. अपनी जेब में चौकोर आकार की चांदी का टुकड़ा रखें

मंगल मंत्र	**|| ◌ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः ||**

बुध

बुध बुद्धि और शिक्षा का ग्रह है, यह भाषण और तर्क से सम्बंधित है और इस प्रकार व्यक्ति के संचार कौशल पर इसका प्रभाव पड़ता है। बुध स्मृति, भाषण, राजनीति, व्यापार और व्यापार, मित्रों, मामा, चाचा, भतीजे, दत्तक पुत्र और तर्क से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **धनु**	अंश **24:27:43**	नक्षत्र **पूर्व षाढ़ा - 4**
स्वामी **सातवाँ ,दसवां भाव**	भाव में **पहला भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / मृत**

बुध आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में बुध पहला भाव में एवं धनु राशि में स्थित है।

आप का व्यक्तित्व बहुत विलक्षण और सजीव है. आप में शारीरिक आकर्षण और चपलता है . आप अपने व्यक्तित्व को संवारने के लिए प्रसाधन सामग्री का प्रयोग भी कर सकते हैं. आप अपनी बुद्धि और तर्क शक्ति का सदुपयोग करते हैं . आप चतुर, वाक्पटु, मजाकिया, और शायद अतिसंवेदनशील भी हैं . आपके वचन और लेख आप की निजी राय को प्रतिबिंबित करते हैं . जीवन के प्रति आप का नजरिया जिज्ञासु तथा बौद्धिक है, और यह आपके व्यक्तित्व में स्पष्ट रुप से दर्शित होता है . काम के प्रति आप सुव्यवस्थित दृष्टिकोण रखते हैं . आप एक विनम्र व्यक्ति हैं और कठिन परिस्थितियों में भी आक्रामक नहीं होतें

> “ आप अपने सौंदर्य और साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं

आप विद्वान, तेजस्वी और गणित के क्षेत्र में निपुण हैं. आपको कविता, मूर्तिकला, वक्तृत्व, लेखन और देशी चिकित्सा के ज्ञान में रुचि है. आपकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र है .आप को सम्बन्ध बनाने और कई अलग अलग विषयों के बारे में जानकारी हासिल करने में आनंद मिलता है . आप परिस्तिथियों के अनुसार अपने को बदल सकते हैं . आप अपने जीवन के हर पहलू में सुनियोजित और तार्किक कदम उठाते हैं. यहां तक कि विवाह के समय भी आप अपने पति या

पत्नी के माध्यम से व्यापार के अवसर खोजते हैं . आपका विवाहित जीवन बहुत संतोषजनक नहीं रहेगा . आप को अपने जीवन साथी की हर छोटी- बड़ी बात की आलोचना करने की आदत होगी

आप को कन्या या बेटी के माध्यम से खुशी प्राप्त होगी .आप अक्सर चिड़चिड़े और तनावग्रस्त रहते हो जिसके कारण आपका शरीर दुबला-पतला रहता है. स्नायु संबंधी विकार हो सकते हैं . आप जब भी मानसिक रूप से परेशान रहेंगें, तब आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो जाएगा . आप पेट या नसों संबंधी समस्यायों का सामना कर सकते हैं .एक छोटीसी चांदी की डिब्बी में थोड़े से चावल भरें और घर में रखें - लाभ होगा. शराब से बचें.

बुध मंत्र	**|| ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ||**

गुरु

बृहस्पति को मंत्रि ग्रह माना जाता है जो ज्ञान, खुशी और अच्छे भाग्य से संबंधित है। बृहस्पति धन, ज्ञान, गुरु, पति, पुत्र, नैतिक मूल्यों, शिक्षा, दादा दादी और शाही सम्मान का कारक है। यह धार्मिक धारणा, भक्ति और लोगो के विश्वास को दर्शाता करता है।

आपकी कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
कुम्भ	**03:56:28**	**धनिष्ठा - 4**

स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
पहला ,चौथा भाव	**तिसरा भाव**	**नहीं / बाल**

गुरु आपकी कुंडली मे सम है

आपके जन्मपत्रिका में गुरु तिसरा भाव में एवं कुम्भ राशि में स्थित है।

आप का व्यक्तित्व मनमोहक है . आप धार्मिक प्रवृत्ति के हैं और ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखते हैं . आप रीति-रिवाजों और पुराने मानदंडों के समर्थक हैं . आप में प्रगाढ़ अंतर्ज्ञान है . आपका मन आसानी से बातों और विचारों को समझने के लिए सक्षम है . आप में अव्यावहारिक व आत्म संतुष्ट होने की प्रवृत्ति है . आपके भावों और विचारों को समझना दूसरों के लिए मुश्किल होता है

> “ आप दार्शनिक, आशावादी, रुढ़िगत और विचारशील हैं

आप बहुत मुखर और स्पष्टवादी हैं और आप में व्यापारिक चतुराई की कमी है .आप को साझेदारी के कारोबार में सफलता प्राप्त होगी . आप एक स्वाभाविक अध्यापक और प्रशिक्षक हैं, विशेष रुप से व्यावसायिक विषयों में . आप पब्लिक स्पीकिंग, लेखन, प्रकाशन, शैक्षिक यात्रा, टूर गाइड, कॉर्पोरेट प्रशिक्षण, इत्यादि से सम्बंधित करियर के लिए अनुकूल हैं. ३२ वर्ष की आयु के बाद आप के जीवन में सौभाग्य जागृत होगा . आप बहुत सारा पैसा भले ही न कमा पाएं लेकिन आप भरपूर सम्मान पायेंगें . आप अपने माता-पिता और शिक्षकों का सम्मान करते हैं और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं

भाइयों और बहनों के साथ अच्छे संबंध आप के भाग्य को बेहतर बनायेंगें . आपका वैवाहिक जीवन संतोषजनक नहीं होगा. या तो आप अपनी पत्नी से अलग हो जायेंगें या अपनी पत्नी के रहते किसी और से शादी या सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं .अपनी ऊर्जा को अनावश्यक कार्यों पर बरबाद न करें . आप किसी भी बड़ी बीमारी से ग्रस्त नहीं होंगे लेकिन छोटी मोटी स्वास्थ्य समस्याओं के कारण आप परेशान रह सकते हैं . आप को हेपेटाइटिस, गले के संक्रमण, कान और पेट से संबंधित समस्याएं हो सकती हैं. खूब पानी पीना आपकी सेहत के लिए हितकारी है

गुरु मंत्र	**|| ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः ||**

शुक्र

वीनस कामुक सुख और कामुक आवेगों से सम्बंधित है। चमक और जीवन शक्ति का ग्रह होने के नाते भौतिकवाद और मांस के आनंद को दर्शाता है। वीनस को यौन इच्छाओं (काम), कामेच्छा, पत्नी का महत्व का कारक माना जाता है। यह जुनून, विवाह, लक्जरी लेख, गहने, वाहन, आराम और सुंदरता से संबंधित है।

आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
धनु	**27:03:51**	**उत्तर षाढ़ा - 1**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
छठा ,ग्यारहवाँ भाव	**पहला भाव**	**नहीं / मृत**

शुक्र आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शुक्र पहला भाव में एवं धनु राशि में स्थित है।

आप शारीरिक रूप से आकर्षक हैं . आपका चुंबकीय व्यक्तित्व सौम्य और करिश्माई आभामंडल से परिपूर्ण है . आप दिल के बहुत साफ हैं . सुन्दर होने के साथ आप स्नेहशील और जोशीले भी हैं . आप फैशन परस्त हैं और सुरुचिपूर्ण ढंग के पोशाक और अलंकार पहनना पसंद करते हैं . आप हर उस चीज़ से सहसम्बद्ध हैं जो आपसे या आपकी छवि से जुडी है . आप स्वभाव से मिलनसार और शिष्ट हैं . आप काफी व्यवहारकुशल हैं और झगड़ों से दूर ही रहना पसंद करते हैं

> “ आप पहली झलक में ही लोगों को मोह लेते हैं

आप को कविता, चित्रकला, इंटीरियर डिजाइनिंग, फैशन डिजाइनिंग और साहित्य में विशेष रुचि हो सकती है . आप रेडीमेड कपड़ों, विदेशी ब्रांडेड वस्तुओं, घर की सजावट के सामान, आदि से संबंधित व्यवसाय कर सकते हैं .आप विलासिता और ऐश्वर्य के शौकीन हैं . व्यक्तिगत संबंधों में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करना आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है . आप कभी कभी स्वार्थी और आत्म-केन्द्रित हो सकते हैं . आप गरिष्ट और स्वादिष्ट भोजन खाना पसंद करते हैं

और पर्याप्त व्यायाम न करने के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है . आप मूत्र संक्रमण, सिर दर्द, आंख या त्वचा से संबंधित समस्याओं से पीड़ित हो सकते हैं.आपके प्रेम सम्बन्ध सफल रहेंगें

आप का वैवाहिक जीवन सुखद और सम्पन्न होगा . विवाहेतर सम्बन्ध अथवा व्यभिचार आपकी पारिवारिक शांति के अलावा आपकी आर्थिक स्तिथि पर भी बुरा प्रभाव डाल सकते हैं . संतान उत्पत्ति में समस्याएं हो सकती हैं. कोई भी नए कार्य की शुरुआत करने से पहले किसी दुसरे अनुभवी व्यक्ति की सलाह जरूर लें. २८ वर्ष की आयु में विवाह न करें . अपने प्रयोजन या मतलब के लिए लोगों का फायदा उठाने से बचें . अपने आस पास सफ़ेद फूलों वाले पौधें लगवाएं

शुक्र मंत्र	**|| ॐ हीं श्रीं शुक्राय नमः ||**

शनि

शनि एक धीमी गति का ग्रह है। इसे न्याय, तर्क और विनाशकारी शक्तियों का ग्रह कहा जाता है। यह आपदाओं और मृत्यु से संबंधित है। शनि को एक शिक्षक के रूप में भी माना जाता है। शनि लंबी उम्र से सम्बंधित है। यह देरी, अवरोध, दु: ख, नुकसान, चोरी, बुढ़ापे, दु: ख, प्रतिकूलता और आजादी सेसम्बंधित है।

आपकी कुंडली में शनि ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
मीन	**21:09:53**	**रेवती - 2**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
दूसरा ,तिसरा भाव	**चौथा भाव**	**नहीं / कुमार**

शनि आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शनि चौथा भाव में एवं मीन राशि में स्थित है।

आप रूढ़िवादी हैं और पुराने, पारंपारिक तरीके और बातों में विश्वास रखते हैं. अज्ञात के भय से आप परिवर्तन पसंद नहीं करते हैं . आप कमजोर दिल के हैं और इसी कारण आप को कोई भी निर्णय लेने में कठिनाई होगी . आप शंकालु और वहमी हो सकते हैं . आप मानसिक रूप से पूरी तरह संतुष्ट नहीं रह पायेंगें .आपके परिवार को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं . अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आप को काफी परिश्रम करना होगा . सुरक्षा कारणों की खातिर आप संपत्ति जमा करना चाहते हैं . आप पर घर या पारिवारिक जीवन की कई जिम्मेदारियों हो सकती हैं

> “ आप माता-पिता के प्रति समर्पित हैं और आपका स्वभाव स्नेहशील हैं

आप कुछ हद तक एक तानाशाह की तरह सख्त अनुशासन में विश्वास रखते हैं .अपना खुद का घर बनाना या खरीदना आपके लिए बहुत मुश्किल होगा; संभव हैं कि आप जीवन भर किराये के मकान में रहें . आपका विवाह या तो अल्पायु में या देर से होगा . पारिवारिक सुख और शांति के लिए आप को अपने जीवन साथी के साथ समझौता करना पड़ सकता हैं .काम के मामलों में आप बहुत मेहनती, अनुशासित और संगठित हैं . कैरियर शुरू करने में देरी हो सकती है .

आपका कैरियर घर और परिवार के मुद्दों से संबंधित होगा . आप अचल संपत्ति, निर्माण परियोजनाओं, घरेलू उत्पादों या घर से कोई काम करने में व्यस्त हो सकते हैं . जीवन का उत्तरार्ध अधिक लाभजनक हो सकता है

अंतरस्थ चिंताएं अल्सर का कारण बन सकती हैं . हड्डियों और जोड़ों सम्बंधित व्याधियों का सामना करना पड़ सकता हैं . आप को गैस, अल्सर, पीलिया, खांसी, एक्जिमा जैसी समस्याएं हो सकती है . कर्क रोग के प्रति सावधान रहें . रात में दूध न पीयें . शराब से दूर रहें . ४८ साल की उम्र से पहले अपने नाम पर संपत्ति मत खरीदें . ससुराल वालों के साथ मिलकर व्यापर न करें

शनि मंत्र	**|| ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ||**

राहु

अजीब और अपरंपरागत ग्रह होने के कारण राहु भौतिकवाद से सम्बंधित है और कठोर वाणी, कमी और इच्छा से सम्बंधित है। राहु को ट्रान्सेंडैंटलिज्म का ग्रह कहा जाता है। यह विदेशी भूमि और विदेशी यात्रा से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में राहु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
सिंह	**18:34:33**	**पूर्व फाल्गुनी - 2**

स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
दसवां भाव	**नौवां भाव**	**नहीं / वृद्ध**

आपके जन्मपत्रिका में राहु नौवां भाव में एवं सिंह राशि में स्थित है।

आप बुद्धिमान और योग्यता प्राप्त व्यक्ति हैं . विदेशी भाषाओं पर आप का प्रभुत्व हैं . आप स्वयं अपनी सोच के मालिक हैं और एक बहुत ही आत्मसंतुष्ट व्यक्ति हैं . आप यह उम्मीद करते हैं कि अन्य लोग भी आपकी विचार प्रक्रिया और परियोजनाओं को स्वीकारें और अपनायें . आप नए वैज्ञानिक एवं दार्शनिक संरूपणों में रुचि रखते हैं . आप धनवान, संपन्न और प्रसिद्ध होंगें . आप को आकस्मिक धन लाभ होगा . आप सांसारिक संपत्ति और भौतिक समृद्धि का आनंद उठा पायेंगें . आप आर्थिक और भावनात्मक - दोनों ही रूप से संतुष्ट रहेंगें

> “ आप ईमानदार हैं और न्याय में विश्वास रखते हैं

आप लंबी दूरी की यात्राएं करेंगें; आप विदेशों में भी भ्रमण कर सकते हैं . आप के मन में आध्यात्मिक लोगों और गुरुजनों के लिए श्रद्धा और भक्ति की भावना हो सकती है . आप एक उग्रपन्थी हैं; या तो आप बहुत ही धार्मिक होंगें या फिर आप किसी भी धर्म में विश्वास नहीं करेंगे .आप एक बहुत अच्छे मनोवैज्ञानिक या सलाहकार बन सकते हैं . आप एक सॉफ्टवेयर प्रोग्रामर, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, हार्डवेयर इंजीनियर, आदि के विकल्प भी चुन सकते हैं. आप में एक अच्छे उपदेशक होने के असाधारण गुण हैं .आप के अपने पिता के साथ कुछ मतभेद हो सकते हैं . आप के पिता का स्वास्थ्य ख़राब रह सकता है . संतान प्राप्ति में बाधा हो सकती है

आप का अपरंपरागत विवाह होगा . आप किसी अन्य जाति के या एक तलाकशुदा या उम्र में बड़े व्यक्ति से विवाह कर सकते हैं . किसी भी रक्त-संबंधी के खिलाफ अदालत में मामला दायर न करें . इसका आपके पारिवारिक जीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है .आप को सुनने की समस्या, पीठ का दर्द,

सर्वाइकल, थायराइड, भुजाओं में दर्द जैसी परेशानियां हो सकती हैं . हर सुबह माथे पर चन्दन का तिलक लगाएं और सोना पहनें. अपने ससुराल वालों के साथ अच्छे संबंध बनाये रखें . घर में एक कुत्ते को पालें और उसकी अच्छी तरह से सेवा करें

राहु मंत्र	**॥ ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः ॥**

केतु

केतु मोक्ष, पागलपन का ग्रह है। यह आध्यात्मिकता से सम्बंधित है। केतु रहस्यमय, भ्रामक, गुप्त और पेचीदा ग्रह है। केतु दर्द, रहस्य, गुप्त विज्ञान, उदासीनता, दर्शन, अलगाव और कारावास का प्रतीक है।

आपकी कुंडली में केतु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
कुम्भ	**18:34:33**	**शतभिसा - 4**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
चौथा भाव	**तिसरा भाव**	**नहीं / वृद्ध**

आपके जन्मपत्रिका में केतु तिसरा भाव में एवं कुम्भ राशि में स्थित है।

आप एक साहसी और जल्दबाज व्यक्ति हैं . आप बहुत अमीर और प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगें . आप शक्तिशाली और बुद्धिमान हैं; आप में बहुत मानसिक और शारीरिक ताकत हैं. आपकी उपस्तिथि मनमोहक और खुशहाल है . आपकी मानसिक स्थिति और विचारों को समझना मुश्किल है . आप को बिना मांगे दूसरों को सलाह देने की आदत है . आप दूसरों के बारे में कभी भी बुरा नहीं सोच सकते हैं . कभी कभी आप का मन विक्षुब्ध हो जाता है. मानसिक तनाव विवादों को जन्म दे सकता है . किसी तरह का भ्रम आपके मन को परेशान कर सकता है

> " आप धार्मिक और भगवान से डरने वाले मनुष्य हैं

आप का जीवन लम्बा और सफल होगा . आपकी कमाई अच्छी होगी . यात्रायें लाभकारी होंगीं . आप अपनी जन्मभूमि से दूर विदेशी धरती पर अपना जीवन बिता सकते हैं . आपके जीवन में स्थिरता का अभाव होगा . ट्रैवल एजेन्सी, वाहनों की खरीद/बिक्री, दलाली, आदि जैसे व्यवसाय तथा तंबाकू, खेल और स्टेशनरी के सामान का व्यापार आपके लिए लाभदायक होगा . आप एक अच्छे दल- नेता बन सकते हैं .आप नि:स्वार्थ भाव से अपने परिवार के सदस्यों की जरूरतों का ध्यान रखते हैं . आप के परिवारवालों और आप की पत्नी के बीच मतभेद और संघर्ष हो सकता है

इससे परिवार में कलह हो सकता है और नौबत अलगाव या तलाक तक पहुँच सकती है . आप के बच्चे आज्ञाकारी होंगें . यदि आप दक्षिण मुखी घर में रहते हैं, तो आप को संतान सम्बन्धी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं .शरीर के ऊपरी भाग, विशेष रुप से भुजाओं में चोट लगने का खतरा हो सकता है . आप फोड़े, मुँहासे, कान की और रीढ़ की हड्डी की समस्याओं, उदर संबंधी समस्याओं और मधुमेह जैसी बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं .केसर के तिलक का प्रयोग करें .

सोना पहनें . जरूरतमंद बुजुर्गों की कुछ उपहार दें . भाई बन्धुओं से अच्छे सम्बन्ध बनाकर रखें

केतु मंत्र	**|| ◌ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः||**

भद्रिका योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	13-9-2023 15:20
समाप्ति तिथि:	13-9-2028 15:20

"भद्रिका" शब्द का अर्थ है "कल्याण" अर्थात ये दशा हर तरह से कल्याणकारी होगा। "भद्रिका" योगिनी दशा की पांचवी दशा है,तथा इसके स्वामी "बुध" है और इसकी अवधि पांच साल की होती है। बुध का प्रभाव हमेशा शुभ ही होता है इसलिए इस अवधि को भी प्रायः शुभ ही माना गया है। भद्रिका दशा के प्रभाव उसके अंतर्दशा पर भी निर्भर करते है, इसलिए ऐसा जरुरी नहीं है कि ये दशा है, ये दशा हमेशा शुभ प्रभाव ही देगा या फिर हमेशा अशुभ प्रभाव ही देगा। इस दशा की अंतर्दशा को मिलकर देखा जाए तो ये मिश्रित प्रभाव प्रदान करता है। भद्रिका दशा के अंतर्गत आपको सामाजिक क्षेत्र, अपने भविष्य तथा आपके संबंधों हर तरफ से शुभ प्रभाव ही प्राप्त होंगे। आपके बिगड़े कार्य भी बन जायेंगे और आप हर क्षेत्र में अच्छा करेंगे।

इस अवधि के दौरान आपको समाज में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा, प्रभावशाली लोगों से मिलने का मौका मिलेगा। ये नया संपर्क जो आप स्थापित कर रहे है वो आपको आपके करियर की प्रगति में मदद करेगा।

बुध का शासन आपके जीवन में उत्सव और शुभ अवसर ला सकता है। रोजगार के क्षेत्र में आपका बेहतर होगा, आपको एक अच्छी नौकरी मिल सकती है, पदोन्नति मिल सकती है तथा आप एक बेहतर घर में शिफ्ट हो सकते हैं। आप अपने जीवन के प्रमुख मुकाम इस अवधि के दौरान हासिल कर सकते है।

ये समय आपके उच्च ज्ञान अर्जित करने के लिए अनुकूल है, आप उच्च अध्ययन के लिए अपना नामांकन करवाने को इच्छुक हो सकते हैं या अपनी पसंद के किसी विषय पर स्वयं अध्ययन पाठ्यक्रम शुरू कर सकते हैं। इस अवधि में किसी भी प्रकार के कार्य आप शुरू करते है तो आपको उसमे सफलता जरूर मिलेगी। कई बार इस अवधि के दौरान आपका झुकाव अपनी उच्च मानसिक क्षमताओं और ज्ञान को लेकर अनैतिक कार्य की तरफ हो सकता है, लेकिन आपको ये सलाह दी जाती है कि आप इस तरह के कार्यों की तरफ आकर्षित न हो क्योंकि ऐसा करना आपके लिए और आपके भविष्य के लिए समस्या खड़ी कर सकता है।

उपाय

> - बुध की स्थिति को मजबूत करने के लिए हाथी दांत, कांटेदार भूसी के फूल, सूखे खजूर, कस्टर्ड सेब, सफेद पेठा और गन्ने से बनी वस्तुओं का उपयोग करके आप हवन कर सकते हैं।
>
> - भ्रामरी महादशा के दौरान चार मुखी रुद्राक्ष पहनने से आपको लाभ हो सकता है।

भद्रिका - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	13-9-2023 15:20
समाप्ति तिथि:	24-5-2024 6:50

भद्रिका योगिनी की पहली अंतरदशा "भद्रिका अंतर्दशा" है। इस अंतर्दशा की अवधि लगभग 9 महीने तक चलती है, तथा इसके स्वामी "बुध" ग्रह है। प्रायः इस दशा का प्रभाव शुभ माना गया है, और इसके सभी अनुकूल प्रभाव आपके जीवन में देखे जायेंगे।

इस योगिनी की पहली अंतर्दशा आपके जीवन में शुभ समाचार लेकर आयेगा तथा आप जीवन में विभिन्न क्षेत्र में सफलता हासिल करेंगे। आपके रोजगार के क्षेत्र में भी आपको एक अच्छा मुकाम हासिल होगा, आय वृद्धि तथा पदोन्नति जैसे अवसर प्राप्त होने की संभावना है। आप अपने मित्र तथा अपने वरिष्ठ अधिकारियों का विश्वास हासिल करने में सफल होंगे। आपके वेतन में बढ़ोतरी होने से आपके जीवनशैली में भी बदलाव आएगा। आप एक वाहन खरीद सकते है, यदि आपके पास पहले से ही वाहन है तो आप उसको बदल कर एक नया वाहन लेंगे। आपके व्यक्तिगत जीवन में भी साडी अच्छी चीजें होंगी जैसे आपका वैवाहिक जीवन सुखद चलेगा साथ ही आपके प्रियजनों और मित्रों से भी अच्छे संबंध स्थापित होंगे।

इस अवधि के दौरान आपके पहले की सभी बुरी आदतें छूट जायेगी, उस आदत को फिर कभी अपने जीवन में शामिल न करने के लिए आप सक्षम होंगे और आप एक नये तरीके से अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

भद्रिका - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	24-5-2024 6:50
समाप्ति तिथि:	24-3-2025 15:50

भद्रिका योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसके स्वामी "शनि" है तथा इसकी अवधि लगभग 12 महीनों की होती है। शनि की कठोर दृष्टि की वजह से ये अवधि को एक कठिन अवधि के रूप में जाना जाता है। जैसा कि सब जानते है शनि के प्रकोप से कोई नहीं बच पाता, शनि का जीवन में प्रवेश ही चुनौतिओं का संकेत होता है। ये अवधि की इसलिए कठिनाई से भरी हुई मानी जाती है। इस अवधि के दौरान आपको अपने जीवन के हर क्षेत्र में मुश्किलों और कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। आपके व्यक्तिगत जीवन तथा आपके रोजगार दोनों क्षेत्र में संघर्ष बना रहेगा। इस अवधि के दौरान आपके आत्मविश्वास में कमी होगी जिसकी वजह से आपके नौकरी के आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके नाखुश हो सकते है और आपकी नौकरी संकट में आ सकती है।

आपके व्यक्तिगत जीवन में आपके निजी संबंधों पर भी शनि की दृष्टि पड़ने की संभावना है, जिसकी वजह से आपका आपके जीवनसाथी के साथ मतभेद हो सकता है, आपके सगे-संबंधी आपसे नाराज हो सकते है तथा आपके मित्रों को भी आपसे शिकायत हो सकती है। ऐसे में आपको सलाह दी जाती है कि आप अपने मन को शांत रखें और कोई भी फैसला जल्दबाज़ी में न लें। इस अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का भी ख्याल रखने की आवश्यकता है। ये समय आपके स्वास्थ्य के लिए भी ठीक नहीं है। आपकी सेहत ख़राब हो सकती है जिसकी वजह से आपको चिकित्सकीय सलाह लेनी पड़ सकती है और इलाज कराना पड़ सकता है। आपकी स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ और जीवन में चल रही परेशानियों की वजह से आप मानसिक रूप से थकान महसूस करेंगे और ये आपके तनाव का कारण भी बन सकता है। इन सभी परिस्थिति को देखते हुए आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप अपना और अपने परिवार का थोड़ा ज्यादा ध्यान रखें और कोई भी कार्य को शांत और ठंडे मन से करें।

उपाय

- शनि की स्थिति को मजबूत करने के लिए कस्तूरी, सेमल के पेड़ की टहनियाँ, बेल के पत्ते या फल, और कैक्टस और गुलाब जैसे कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी के पेड़ लकड़ी या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी उपयोग आप हवन में कर सकते हैं। पिंगला तथा उल्का दशा के दौरान इन उपायों के करने आपको लाभ प्राप्त होगा।

- भद्रिका महादशा के दौरान 4 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

भद्रिका - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	24-3-2025 15:50
समाप्ति तिथि:	14-3-2026 18:20

भद्रिका योगिनी की तीसरी अन्तर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इस अंतर्दशा की अवधि लगभग 12 महीने 11 दिनों की है तथा इसके स्वामी "शुक्र" है। शुक्र की कृपा से इसका प्रभाव हमेशा सकारात्मक होता है और इस अवधि को आपके अनुकूल माना जाता है।

इस अवधि के दौरान आपकी दिलचस्पी धार्मिक कार्यो में हो सकती है, आपको पूजा-पाठ, हवन और तीर्थयात्रा करना पसंद होगा। इस अवधि के दौरान आपको पुजारियों से तथा संतों से मिलने का मौका मिल सकता है।

आपका व्यक्तिगत संबंध भी अच्छा होगा। आपका पारिवारिक जीवन खुशियों से भरा हो सकता है। आपके परिवार में ख़ुशी और जश्न के मौके आयेंगे जैसे आपके घर में किसी बच्चें का जन्म हो सकता है, किसी का विवाह हो सकता है या आपके व्यापार की, आपके रोजगार की वृद्धि, आय में वृद्धि इत्यादि। आप सबके साथ मिल कर ये जश्न मनायेंगे।

इस अवधि में आपके अच्छे मित्र बनेंगे और आपके ये मित्र आपके जीवन में अहम भूमिका निभा सकते है। आपको आपके वो पुराने मित्र मिल सकते है जिसके साथ आपका संपर्क खो चूका था। आप उनसे मिलेंगे और उनके साथ एक अच्छा वक्त बितायेंगे। इस अवधि के दौरान आपके साथ सभी अच्छी चीजे होंगी लेकिन आपको उन अवसरों का अच्छे से उपयोग करना होगा। आपको ये सलाह दी जाती है कि आपको मिल रहे इन अवसरों को आप हल्के में न लें और मौके का सही उपयोग करना सीखें।

भद्रिका - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	14-3-2026 18:20
समाप्ति तिथि:	24-4-2027 14:20

भद्रिका योगिनी की चौथी अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इस अवधि का समय लगभग 1 महीने 14 दिनों का होता है तथा इसके स्वामी "राहु" को माना गया है। राहु के प्रभाव की वजह से प्रायः इस अवधि का प्रभाव प्रतिकूल ही होता है। ये तो सभी नाम के लेने से ही समझ सकते है कि राहु अपने साथ दुःख, तनाव और संकट ले कर आता है, तो इस अवधि में आपके ऊपर प्रभाव भी यही होंगे। आपको अपनी चल रही परियोजनाओं में कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है, ऐसी भी संभावना है कि आपका ये परियोजना कार्य ठप भी हो सकता है। कठिन परिस्थिति होने पर भी आपको हार नहीं मानना चाहिए नहीं तो आपसे और ज्यादा गलती होने की संभावना हो सकती है, और आपके द्वारा की गयी ये गलतियां आपके प्रतिष्ठा का नुकसान पहुंचा सकती है। जितना हो सके उतना आप विदेश यात्रा करने से बचें क्योंकि विदेश यात्रा करने से आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यदि आपको किसी कारणवश विदेश यात्रा करना पड़ता है तो इस बात का ध्यान रखें कि आपके पास आपके सारे सरकारी दस्तावेज साथ में हो।

आपके दोस्त और आपके परिवार की वजह से आपको कई जोखिम का सामना करना पड़ सकता है। उनके स्वभाव आपको परेशान कर सकते है या आपके लिए समस्या पैदा कर सकते है। आपके परिवार की वजह से कई बार आपको वो सारे कार्य करने पड़ सकते है जो आप नहीं करना चाहते है।

यदि स्वास्थ्य की बात करें तो इस दृष्टि से भी ये अवधि आपके लिए अच्छी नहीं होगी। आप हर समय ऊर्जाहीन और कमजोर महसूस करेंगे। आपको अपने स्वास्थ्य की नियमित जांच करवानी चाहिए। आपको ये सलाह दी जाती है कि समय चाहे कितना भी खराब हो आपके लिए किन्तु आपको अपने विवेक से काम लेना चाहिए और जल्दबाज़ी में कोई भी फैसला लेने से बचना चाहिए।

उपाय

> - राहु की स्थिति को मजबूत करने के लिए मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजों का उपयोग करना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हवन में हरी दूर्वा घास का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला संकटा दशा के दौरान उपाय करने से आपको इसके कई लाभ प्राप्त होगा।
>
> - भद्रिका महादशा के दौरान 4 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

भद्रिका - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	24-4-2027 14:20
समाप्ति तिथि:	14-6-2027 7:50

भद्रिका योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "मंगला अन्तर्दशा" है। इसका समय 3 महीने 9 दिनों का होता है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चन्द्रमा के शांत और शीतल प्रभाव की वजह इस अवधि का प्रभाव भी आपके अनुकूल होगा। जैसे चन्द्रमा शीतलता प्रदान करता है उसी प्रकार प्रकार चन्द्रमा द्वारा शासित ये अवधि आपके जीवन में राहत प्रदान करेगा। आप भविष्य, आपका परिवार सबका कल्याण होगा और आप इस अवधि में अत्यंत खुश रहेंगे। आपको अपने परिवार और दोस्तों के साथ अच्छा समय व्यतीत करने का मौका मिलेगा। यदि आप अपने परिवार को बढ़ाने की योजना बना रहें हैं तो ये समय आपके संतान सुख की प्राप्ति के लिए अनुकूल है। आपके घर में नये सदस्य के आने के योग इस अवधि में बनते है फिर चाहे वो आपको संतान की प्राप्ति के योग हो या फिर आपके परिवार में किसी और को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपके बच्चें इस अवधि में आपके लिए खुशियों का श्रोत बन सकते है जैसे कि वो अपने विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन कर सकते है या उनको अच्छी नौकरी मिल सकती है।

आपके कार्य क्षेत्र में भी आपको काफी तरक्की मिलेगी। आपको रोजगार के नए अवसर मिलेंगे या आपकी पदोन्नति या आय वृद्धि हो सकती है। आपको व्यापार के क्षेत्र में भी लाभ प्राप्त होगा। आप इस अवधि में नया घर या जमीन खरीदने में सक्षम होंगे। आपको ये सलाह दी जाती है कि आपको जो भी अवसर प्राप्त हो रहें है उन अवसरों का ख़ुशी-ख़ुशी स्वीकार करें और अपने जीवन को खुल कर जीयें।

भद्रिका - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	14-6-2027 7:50
समाप्ति तिथि:	23-9-2027 18:50

भद्रिका योगिनी की छठी अंतर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है । इसकी अवधि 5 महीने और 1 दिन की होती है, तथा इसका स्वामी "सूर्य" को माना गया है। इस समयावधि को चुनौतीपूर्ण अवधि के रुप में माना जाता है।

इस अवधि के दौरान आपको अशुभ और शुभ दोनों प्रकार के परिणाम प्राप्त होंगे। आपके पारिवारिक जीवन में आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपका आपके जीवनसाथी के साथ सुखद संबंध के न होने की संभावना हो सकती है, आपके बीच लगातार झगड़े हो सकते है इसके साथ ही आपका आपके घर के बुजुर्गों के साथ भी मतभेद होने की संभावना है। आपको ये सलाह दी जाती है कि जितना हो सके अपने बड़ों के साथ होने वाले झगड़े को टालने की कोशिश करें। आपको अपने स्वास्थ्य के साथ-साथ अपने घर के बड़े पुरुष सदस्य खास कर अपने पिता के स्वास्थ्य का

ध्यान रखने की आवश्यकता है। आपको आर्थिक क्षेत्र में भी नुकसान का सामना करना पड़ सकता है जैसे कि आपको जमीन या संपत्ति का नुकसान हो सकता है या व्यापार में किये गये निवेश से नुकसान हो सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी कार्य के नतीजे पर पहुंचने से पहले आपको हर संभावित विकल्पों पर विचार कर लेना चाहिए, कोई भी फैसला जल्दीबाज़ी में लें।

भद्रिका - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	23-9-2027 18:50
समाप्ति तिथि:	22-2-2028 23:20

भद्रिका योगिनी की सातवीं अंतर्दशा ''धान्या अंतर्दशा'' है। इसकी अवधि लगभग 6 महीने 19 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी ''बृहस्पति'' को माना गया है। इस अवधि को आमतौर पर एक सकारात्मक और अनुकूल अवधि के रूप में जाना जाता है। इस अवधि के दौरान आपको उच्च ज्ञान प्राप्त करने में रुचि हो सकती है और इसलिए आप एक औपचारिक पाठ्यक्रम में नामांकन करवा सकते है तथा अपने खली समय में आप नये विषयों की पढाई कर सकते है। यदि आर्थिक क्षेत्र की बात करे तो आर्थिक रूप से यह समय आपके लिए अनुकूल हो सकता है। आपको कार्यक्षेत्र में बेहतर अवसर मिल सकते हैं, मनचाही नौकरी या पदोन्नति या आय वृद्धि के अवसर की प्राप्ति हो सकती है। आपकी इस अवधि में संपत्ति अर्जित करने की भी संभावना है जैसे कि आप नया घर खरीद सकते हैं या जमीन में निवेश कर सकते हैं।

आपके घर परिवार में आपके पास जश्न मनाने के कई मौके हो सकते हैं। आपका आपके संतान के साथ संबंध अच्छे रहेंगे और आपका आपके जीवनसाथी के साथ भी सकारात्मक और सुखद संबंधों होगा और आप अपने वैवाहिक जीवन का पूरा आनंद लेंगे। आपको अपने परिवार के साथ समय व्यतीत करना पसंद है और ये अवधि आपको ये मौका देगा जहाँ आप अपने परिवार के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे। कुल मिलाकर आपका इस अवधि के दौरान समय अच्छा व्यतीत होगा हर तरफ से ख़ुशी और लाभ प्राप्त होगा। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने हर अवसर के उपयोग से न चुकें।

भद्रिका - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	22-2-2028 23:20
समाप्ति तिथि:	13-9-2028 15:20

भद्रिका योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा ''भ्रामरी अंतर्दशा'' है। इस अवधि का समय लगभग 11 महीने 29 दिनों का होता है तथा इसके स्वामी ''मंगल'' को माना गया है। इस अवधि में आपको शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के परिणाम देखने को मिलेंगे। आमतौर पर ये मिश्रित अवधि के रूप में जाना जाता है।

ये अवधि आपके लिए थोड़े तनाव और थोड़ी खुशियां ला सकता है। आपका व्यक्तिगत संबंध सभी के साथ क़ाफ़ी बेहतर रहेगा, आप अपने करीबी रिश्तेदार और परिवार के साथ अपने सुखद संबंध का आनंद लेंगे और उनके साथ मिलकर अपनी खुशियों का जश्न मनायेंगे।

इस अवधि के दौरान पारिवारिक जीवन तो सही चलेगा किन्तु आपको अपनी स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए क्योंकि वो आपके लिए एक चिंता का विषय बन सकता है जिसकी वजह से आपकी खुशियों को नज़र लग सकती है। आपको रक्त संबंधी बीमारी हो सकती है इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपनी सेहत का नियमित जांच करवाते रहें। आपको आग या आग से संबंधित चीजों से चोट लगने की संभावना है इसलिए ऐसी चीजों से दूर रहने की कोशिश करें। संपत्ति के मामले में कुछ विवाद आपकी चिंता को बढ़ा सकते हैं। यदि आप किसी के साथ संपत्ति संबंधित कोई लेन-देन करते है तो उन चीजों का दस्तावेज बना कर एक सबूत के तौर पर अपने पास रख लें ताकि कोई समस्या या विवाद के आने पर आप अपने

सबूत को दिखा कर ऐसी विवादों से बाहर आ सकें। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप संयम बनाये रखें ये अवधि आपके लिए अच्छे और बुरे दोनों तरह के प्रभाव लेकर आती है इसलिए किसी भी परिस्थिति में आप अपना संयम न खोएं।

उल्का योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	13-9-2028 15:20
समाप्ति तिथि:	13-9-2034 15:20

उल्का योगिनी दशा की छठी योगिनी दशा है। इसकी अवधि 6 वर्ष की होती है तथा इसके स्वामी "शनि" को माना गया है। उल्का को एक अशुभ दशा माना गया है। शनि की छाया की वजह से इस अवधि को चुनौतीपूर्ण माना गया है तथा इस दौरान आपका जीवन प्रतिकूल दशा में चलने की संभावना है। चूँकि उल्का योगिनी की दशा के साथ उसकी अन्तर्दशा भी आती है इसलिए ये जरुरी नहीं है कि इस पूरी अवधि में आपका समय ख़राब ही चलेगा इस योगिनी की अंतर्दशा की वजह से उसके कुछ अच्छे और अनुकूल परिणाम भी आपको देखने को मिलेंगे। ये दशा हमेशा अशुभ फल ही दे ऐसा जरुरी नहीं है। इस दशा के स्वामी शनि है तो इस दशा में आपके जीवन के विभिन्न पहलुओं में कुछ न कुछ चुनौती का सामना आपको करना ही पड़ेगा। आपके कार्यक्षेत्र में परेशानी आ सकती है। आपके द्वारा किये गए कार्य में देरी हो सकती है या फिर आपने कोई काम बिल्कुल सही ढंग से किया हो सब सही चल रहा हो किन्तु अंतिम समय में कुछ परिस्थिति ऐसी हो जाये जिसकी वजह आपका कार्य बिगड़ सकता है या परिणाम में देरी हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में आप अपना धैर्य न खोये और न ही जल्दबाज़ी में कोई फैसला लें। शनि के प्रभाव की वजह से आपका आपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ तनावपूर्ण संबंध हो सकता है इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप जितना हो सके गलती करने से बचें। आपके दफ्तर में आपके साथ काम करने वाले सहकर्मी का व्यवहार आपके प्रति बदल सकता है। आपको पहले की तरह सहयोग नहीं भी कर सकते है तो ऐसी परिस्थिति में खुद पर संयम रखें और शांति के साथ उनसे बातचीत करें।

आर्थिक रूप से भी आपको कुछ दिक्कत होने की संभावना है। जहाँ एक तरफ आप धन संचय की योजना बनाने की कोशिश करेंगे वही दूसरी तरफ आपके घर चोरी होने की संभावना हो सकती है।, इसलिए आपको अपने घर में कीमती सामान को सुरक्षित रखना चाहिए।

आपके घर का माहौल उदास हो सकता है जिसका कारण आप और आपके परिवार ही होंगे। आपके बच्चों की तरफ से आपको प्रतिकूल समाचार मिलने की संभावना है जैसे उनके परीक्षा के परिणाम या अनुकूल विद्यालय में नामांकन का न होना इत्यादि। इसके साथ ही आपको अपने और अपने बच्चों तथा माता-पिता की सेहत का भी खास ख्याल रखना चाहिए। आपको अपने रिश्तेदारों के स्वास्थ्य पर भी नज़र रखना चाहिए क्योंकि इस अवधि के दौरान उनकी तरफ से किसी बड़े की मृत्यु की संभावना बन सकती है।

इन तमाम बातों और परिस्थिति को देखते हुए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने मन को शांत रखें, किसी भी कार्य में जल्दबाज़ी न करें और अपना धैर्य बनाये रखें।

उपाय

> - उल्का महादशा के दौरान 7 और 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

उल्का - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	13-9-2028 15:20

समाप्ति तिथि: 13-9-2029 21:20

उल्का योगिनी की पहली अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 14 महीने तक चलती है। शनि की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से ये समय आपके लिए बहुत कठिन हो सकता है। आपके करियर से लेकर आपके व्यक्तिगत संबंध तक आपको को चुनौती और कई नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपके रोजगार के क्षेत्र में आपका काम ढंग से न चलने की संभावना है जिसकी वजह से आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके खुश नहीं रहेंगे और आपकी नौकरी जाने की संभावना बन सकती है। नौकरी जाने की वजह से आपको आर्थिक तंगी का सामना भी करना पड़ सकता है।

आपके व्यक्तिगत संबंध भी अच्छे और सुचारु ढंग से नहीं चलेंगे। आपका वैवाहिक जीवन भी सुखद रुप से चलने में परेशानी है, आपका और आपके जीवनसाथी के बीच मतभेद होने की सम्भावना है। आपके परिजन भी आपसे किसी भी कारणवश खुश नहीं रहेंगे। सेहत के मामले की बात करें तो उसमे भी आपको कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपनी सेहत को लेकर थोड़ी भी आशंका होती है तो तुरंत आपको डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए। आपको अपने रिश्तेदारों का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस दौरान आपके रिश्तेदार में मृत्यु की संभावना है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप इस अवधि के दौरान सचेत रहें और अपनी बुद्धि से काम लें।

उपाय

> - शनि की स्थिति को मजबूत करने के लिए कस्तूरी, सेमल के पेड़ की टहनियाँ और सामग्री, बेल के पत्ते या फल, और कैक्टस और गुलाब जैसे कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी/खेजड़ी के पेड़ या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी हवन में उपयोग कर सकते हैं। संकटा तथा उल्का दशा के दौरान उपाय करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।
>
> - उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि: 13-9-2029 21:20

समाप्ति तिथि: 14-11-2030 0:20

उल्का योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 16 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। शनि और शुक्र की मिलीजुली प्रभाव की वजह से इस अन्तर्दशा का प्रभाव भी मिश्रित देखा जाता है।

शुक्र के प्रभाव की वजह से इस अवधि में आपका थोड़ा कल्याण हो सकता है, किन्तु शनि के प्रभाव होने की वजह से सब कुछ एकदम से ठीक नहीं हो जायेगा आपके कार्य में बाधाएं आयेंगी किन्तु आप उसे अपनी मेहनत और दृढ़ता से दूर करने में सक्षम होंगे। आप अपने दृढ मेहनत और विश्वास से अपने लक्ष्य को पाने में सक्षम होंगे। इस अवधि में आपकी मेहनत और लगन ही आपकी सफलता की कुंजी होगी।

इस अवधि के दौरान आपको अच्छी ख़बरें मिलेंगी आपका विदेश यात्रा की संभावना बन सकती है। अपने छुट्टी का समय आप अपने परिवार और मित्रों के साथ बितायेंगे, उनके साथ यात्रा की योजनाएं बनायेंगे। यात्रा करते हुए आप हर जरुरी दस्तावेज अपने साथ रखें और अपनी कीमती सामान को अपने पास संभाल के रखें। ये अवधि आपके लिए शुभ और अशुभ दोनों पहलु को लेकर आती है इसलिए आपको सावधान रहने की जरूरत है।

आपका स्वास्थ्य आपके चिंता का कारण बन सकता है इसलिए डॉक्टर की सलाह का पालन करने का प्रयास करें और स्वस्थ जीवन शैली अपनाएं। इस अवधि के दौरान आपको किसी प्रिय को खोने का डर भी आपको परेशान कर सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी बात को

लेकर अधिक न सोचें जो आपके तनाव का कारण बनें और हर परिस्थिति में समझदारी से काम लें।

उल्का - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	14-11-2030 0:20
समाप्ति तिथि:	15-3-2032 0:20

उल्का योगिनी की तीसरी अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 2 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "राहु" है। इस अवधि को नकारात्मक और कठिन माना जाता है क्योंकि इस अंतर्दशा पर राहु का साया है।

माना जाता है कि राहु की मौजूदगी जीवन में अशांति फैलाती है, इसलिए इस अवधि को चुनौती से भरा हुआ माना जाता है। ये समय आपके और आपके परिवार के लिए कठिन हो सकता है। आपका परिवार, आपके जीवनसाथी, आपके बच्चे, गृहस्थ और मित्र सभी कठिन समय से गुजर सकते हैं। जहां वे स्वास्थ्य को लेकर, वित्तीय नुकसान को लेकर, स्कूल में किसी कठिनाई से या रोजगार के क्षेत्र में परेशानी से पीड़ित हो सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में एक दूसरे का साथ देने की कोशिश करें, एक दूसरे का सहारा बनें। इस अवधि में अपने रिश्तेदार और अपने माता-पिता की सेहत का ख्याल रखें। किसी भी परिस्थिति में तनाव से बचें क्योंकि तनाव आपके स्वास्थ्य के साथ-साथ आपके मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। डॉक्टर की सलाह का पालन करने और स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखने का प्रयास करें। इस अवधि के दौरान आप पने किसी प्रियजन को खो सकते हैं। आपके परिवार के लोग कई बार आपके विचारों से सहमत नहीं होंगे। आपके रिश्तेदार आपकी समझ और विचार के खिलाफ काम कर सकते है, जिसकी वजह से आपको अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि जितना हो सके इस समय विवादों से बचें, ये समय थोड़ा कठिन है इसलिए इस समय में थोड़ी सावधानी बरतें।

उपाय

> - राहु को मजबूत करने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग करना चाहिए। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, सोफ, गिलोय, नींबू का प्रयोग हवन के लिए कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हरी दूर्वा घास या ईख का भी हवन में प्रयोग करना चाहिए। संकटा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।
>
> - उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	15-3-2032 0:20
समाप्ति तिथि:	14-5-2032 21:20

उल्का योगिनी की चौथी अंतर्दशा "मंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 5 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चन्द्रमा की

प्रभाव की वजह से इस अवधि का प्रभाव भी आपके जीवन में अनुकूल ही होगा।

आपके जीवन में चल रही कठिनाईयों से चंद्रमा आपको आवश्यक राहत दिलाएगा। इस अवधि के दौरान आपको अनेक लाभ प्राप्त होंगे और साथ ही आपको करियर के क्षेत्र में भी अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। आपको अपनी परियोजनाओं में सफल होने के लिए आवश्यक समर्थन मिल सकता है। यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते है तो आपको आपके व्यवसाय में निवेश करने के लिए अच्छे निवेशक मिल सकते है। आपकी नौकरी की तलाश भी इस अवधि में आ कर पूरी होगी। आपके निजी संबंध भी अच्छे होंगे इस अवधि के दौरान तथा आपका परिवार आपकी खुशियों का कारण बन सकता है। आप पाने जीवनसाथी और अपने बच्चों के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे साथ ही उनकी तरफ से आपको कुछ अच्छी खबर मिलने की संभावना है।

आप यदि अपनी पढाई बढ़ाना चाहते है तो ये समय आपके पढ़ाई को आगे बढ़ाने के लिए सबसे बेहतर समय है, इस अवधि में आप किसी भी विषय में अपना नामांकन करवा सकते है ये आपके लिए बेहतर परिणाम के अवसर लेकर आयेगा। इस अवधि के दौरान आपकी स्वास्थ्य संबंधी सारी परेशानी से भी राहत मिल सकती है।

उल्का - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	14-5-2032 21:20
समाप्ति तिथि:	13-9-2032 15:20

उल्का योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 5 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के कठोर स्वभाव का प्रकोप इस अवधि के प्रभाव में भी देखा जा सकता है, आमतौर पर ये अवधि एक प्रतिकूल चरण के रूप में जाना जाता है।

शनि और सूर्य दोनों का मिलाजुला रूप आपके जीवन में कुछ चुनौतियाँ लेकर आता है। आपके कार्यक्षेत्र और आपके परिवार दोनों ही तरफ से आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा भो सकता है कि कई चीजें आपके द्वारा बनायी गयी योजना के अनुसार नहीं चले। जिसकी वजह से आपको काम और घर में मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। इस अवधि में आपके माता-पिता का स्वास्थ्य आपके चिंता का विषय बना रह सकता है। इसलिए उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखें और डॉक्टर के द्वारा दी गयी सलाह का पालन करें।

आपको यात्रा करने के अवसर प्राप्त हो सकते है किन्तु यात्रा पर निकलने के दौरान आपको सतर्क रहने की आवश्यकता है। इस अवधि के दौरान यदि आप कार्य की वजह से यात्रा करते है तो वो यात्रा आपकी सफल नहीं होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी समस्या भी आपको हो सकती है इसलिए आपको नियमति उपचार करना चाहिए और डॉक्टर के संपर्क में रहना चाहिए।

उपाय

> - आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ के फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी तथा आंवला जैसी वस्तु अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या एक से अधिक वस्तुएं रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होंगे। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला पिंगला दशा के दौरान इन उपायों को करना लाभकारी सिद्ध होगा।
>
> - उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	13-9-2032 15:20
समाप्ति तिथि:	15-3-2033 6:20

उल्का योगिनी की छठी अंतर्दशा धन्य है। इसकी अवधि 9 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" है। इस अवधि को एक कठिन अवधि माना गया है और इस अवधि के प्रभाव भी प्रतिकूल होते है। इस अवधि में आपको कई सारी समस्या का सामना करना पड़ सकता है, आपके जीवन में कठिन चुनौतियां आयेंगी। इस अवधि में आपको अपने स्वास्थ्य का बेहद ख्याल रखना चाहिए क्योंकि आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्या हो सकती है। यदि आपकी सेहत से जुड़ी कोई परेशानी तुरंत खत्म नहीं हो रही है तो आपको जल्द से जल्द डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

आपको रोजगार के क्षेत्र में भी कई परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके साथ वाले सहकर्मी आपके विरोध में खड़े हो सकते है, आपके वरिष्ठ आपके कार्य से संतुष्ट नहीं होंगे जिसकी वजह से आपकी नौकरी खतरे में आ सकती है। कोई भी कार्य करते हुए आप अपना धैर्य न खोये, अपना सारा ध्यान अपने कार्य पर केंद्रित करें। जल्दबाज़ी में कोई भी ऐसा कार्य न करें जिससे आपको बाद में पछताना पड़े।

आपको अपने कार्य में बहुत अधिक प्रगति नहीं मिलने की संभावना है जिसकी वजह से आपको निराशा हो सकती है, किन्तु इस वक़्त आपको हौसले के साथ काम लेना चाहिए ताकि आप इस दुर्लभ परिस्थिति का सामना कर सकें। आपके व्यक्तिगत संबंध भी इस अवधि में प्रभावित होंगे। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप जल्दीबाज़ी में फैसला लेने से बचें।

उपाय

> - आप बृहस्पति की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए अनाज, नींबू, हल्दी, पीला सरसों और पीपल के पेड़ से बनी छोटी गोलियों का उपयोग कर सकते हैं। आपको अपने साथ रेशम और प्राकृतिक कपास रखना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ पीपल के पेड़ की शाखाओं और पत्तों का भी हवन में उपयोग करना चाहिए। संकट धान्या दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।
>
> - उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	15-3-2033 6:20
समाप्ति तिथि:	13-11-2033 18:20

उल्का योगिनी की सातवीं अन्तर्दशा भ्रामरी है। इसकी अवधि 10 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "मंगल" है। मंगल के प्रभाव की वजह से ये समय थोड़ा कठिन होता है और इसके प्रभाव भी प्रतिकूल होते है। इस अवधि के दौरान आप में आत्मविश्वास की कमी होने की संभावना है इसके साथ ही आपके जीवन में संघर्ष बना रहेगा। इस अवधि के दौरान आपके शत्रु होने की संभावना है, जो आपके जीवन में परेशानी पैदा कर सकते है। जिसकी वजह से आप चिंताग्रस्त हो सकते है। यदि शांत मन से इन समस्याओं से निपटना चाहे तो आप इन समस्याओं से अच्छे तरीके से निपट सकते है।

आपके निजी जीवन में भी संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। आपके परिवार, प्रियजन, मित्र और सहकर्मी, आपके किसी भी संबंध में इस अवधि के दौरान सामंजस्य स्थापित नहीं हो पायेगा। जिसके कारण आप परेशान रहेंगे आपके मन को शांति नहीं मिलेगी। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने सभी रिश्तें को संभाल के रखें और सभी को साथ ले कर चलें। रिश्तों से आये मतभेद को आप शांतिपूर्ण बातचीत से सुलझा सकते है।

इसके अलावा आपके स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं भी बनी रहेगी। आपके पुराने चोट या पुरानी बिमारियाँ फिर से ताज़ा हो सकती है, जिसको ठीक करने के लिए आपको एक उचित उपचार और बेहतर इलाज की आवश्यकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि सेहत से संबंधित किसी भी मुद्दे को लेकर लापरवाह न रहें। अपनी सेहत का पूरा ध्यान रखें।

> उपाय लाभकारी सिद्ध होगा।
>
> - उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	13-11-2033 18:20
समाप्ति तिथि:	13-9-2034 15:20

उल्का योगिनी की आठवीं अंतर्दशा भद्रिका है। इस अवधि का समय 25 महीने का होता है तथा इसके स्वामी "बुध" को माना गया है। शनि और बुध दोनों की कृपा इस अवधि के दौरान देखी जाती है इसलिए ये अवधि आमतौर पर मिश्रित परिणाम देने के लिए जाना जाता है।

इस अवधि में आपको आर्थिक लाभ तो होगा किन्तु आपको सतर्क रहने की भी आवश्कता है। धन के नये श्रोत आपको मिल सकते है किन्तु आपको अपनी कीमती सामान के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि इस समय आपका कीमती सामान चोरी हो सकता है। यदि आपको किसी एक क्षेत्र में लाभ हासिल हो रहा है तो दूसरे क्षेत्र में आप हानि के शिकार हो सकते है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी मुद्दे पर फैसले को लेने से पहले उसके पक्ष-विपक्ष पर अच्छे से विचार कर लें। जल्दबाज़ी में कोई भी फैसला न लें। आपको आपके परिवार और मित्र की तरफ से शुभ समाचार मिलने की संभावना है, आप उनकी खुशियों का हिस्सा बने। इस अवधि के दौरान आप अपने मनोरंजन के लिए भी कुछ समय निकाल सकते है। आपको ये सलाह दी जाती है की अच्छे और बुरे परिस्थिति चाहे जैसी भी हो आप अपना संयम न खोये और शांत मन से कोई भी कार्य करें।

उपाय

> - आप हवन के लिए हाथी के दांत, कांटेदार भूसी के फूल, छुआरे, कस्टर्ड सेब, सफेद पेठा और गन्ने से बनी वस्तुओं का उपयोग कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ चिचड़ी का भी उपयोग आपको करना चाहिए। उल्का भ्रदारिका दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।
>
> - उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

सिद्धि योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	13-9-2034 15:20
समाप्ति तिथि:	13-9-2041 15:20

सिद्धा सातवीं योगिनी दशा है। इसकी अवधि 7 वर्ष की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। शुक्र की कृपा की वजह से ये अवधि आपको अनुकूल और सुखद प्रभाव देती है। सिद्धा दशा हर प्रकार से आपका शुभ करती है। ये दशा आपके अनुकूल है जिसकी वजह से यदि आप कोई कार्य आरंभ करते है तो उसके शुभ परिणाम आपको अवश्य प्राप्त होंगे। यदि आपको किसी कार्य के न होने की आशंका है तो आप उस कार्य को यदि इस अवधि में करेंगे तो वो कार्य अवश्य पूरा होगा और आपको सफलता भी हासिल होगी।

आपके जीवन में पहले से चल रही परेशानियों से इस अवधि में आपको कुछ राहत मिल सकती है। आपके जीवन में अच्छे कार्य होंगे, आपको शुभ समाचार मिलने की संभावना है। आपको घर में शुभ अवसरों और समाचार आपको प्राप्त होंगे। आपकी रोजगार के क्षेत्र में भी उन्नति होगी जैसे आपकी आय बढ़ सकती है या आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपके घर में शुभ अवसर आयेंगे, घर में विवाह होने की संभावना है या परिवार के किसी सदस्य को संतान प्राप्ति होगी।

यदि आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अच्छा करना चाहते है तो ये अवधि आपके लिए व्यवसाय के नये अवसर ला सकती है। यदि आप कई दिनों से रोजगार की तलाश कर रहे है तो ये अवधि आपको आपके मनपसंद रोजगार दिलाने में भी मददगार साबित होगी। आपका रोजगार और व्यवसाय सही ढंग से चलने की वजह से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अच्छी आर्थिक स्थिति होने की वजह से आप घर खरीदने की योजना बना सकते है और सुख-सुविधा की सभी चीजें अर्जित कर सकते हैं। शुक्र सुंदरता और प्रेम को नियंत्रित करता है, इसलिए इस अवधि के दौरान आप अपनी सुंदरता से जुड़ी चीजों पर ध्यान देंगे। आपको कपड़े और गहने लेने का शौक है जिसकी वजह से आप नये कपड़े और गहने की खरीदारी करने से बाज़ नहीं आयेंगे। अपने विपरीत लिंग के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखते है तथा उनकी संगति का आनंद भी लेते हैं।

उपाय

- शुक्र की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए छोटी इलायची, गूलर का पौधा, सेमल के पेड़ का कोई भाग, सुगंध वाली वस्तुएं जैसे इत्र और धूप, फूल मूली के फूल के पौधे का प्रयोग कर हवन कर सकते हैं।

- सिद्धा महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष धारण कर आप उसके लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

सिद्धि - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	13-9-2034 15:20
समाप्ति तिथि:	23-1-2036 18:50

सिद्ध योगिनी की पहली अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 30 महीने और 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। सिद्धा योगिनी दशा में जब सिद्धा की ही अंतर्दशा होती है तो हर तरफ से सिद्धि ही प्राप्त होती है, सारे बिगड़े कार्य बनते है। इस अवधि के दौरान धन, वैभव, ऐश्वर्य की वृद्धि होने लगती है, कीर्ति और राजसम्मान प्राप्त होने लगता है, प्रियजनों से प्यार और अपनापन प्राप्त होता है। इस अवधि

के दौरान आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध अच्छा और मजबूत रहेगा। आप एक-दूसरे के साथ ख़ुशी के पल साझा कर सकते है। इस अवधि के दौरान आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। आप अपने जीवनसाथी के साथ छुट्टी पर भी जा सकते है। आपके संतान की वजह से आपको खुशखबरी भी मिलने की संभावना है।

यदि रोजगार के क्षेत्र की बात करें तो आपके रोजगार के क्षेत्र में भी तरक्की होने की संभावना है। आपको अपने रोजगार में नये अवसर प्राप्त होंगे और आपकी मेहनत और लगन से आपके वरिष्ठ आपसे खुश रहेंगे और आपके योगदान के लिए आपकी सराहना करेंगे। आपको बेहतर कार्य के लिए पुरस्कृत भी किया जा सकता है। यदि आप अपना कोई व्यापार शुरू करना चाहते है तो ये अवधि आपके लिए शुभ है और व्यापार शुरू करने के लिए ये एक अच्छा समय हो सकता है।

सिद्धि - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	23-1-2036 18:50
समाप्ति तिथि:	13-8-2037 22:50

सिद्धा योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "संकटा अन्तर्दशा" है। इसका समय 18 महीने का होता है तथा इसके स्वामी "राहु" को माना गया है। चूँकि इस अवधि पर राहु का शासन है इसलिए आपके जीवन में इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इस अवधि का प्रभाव आपके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन पर पड़ने की संभावना है। इस अवधि के दौरान आपके परिवार के लोगों को भी काफी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। आपके वैवाहिक जीवन पर भी इसका गहरा असर पड़ेगा, आपके और आपके जीवनसाथी के बीच मतभेद हो सकता है। जिसकी वजह से आपको काफी तनाव से गुजरना पड़ेगा। यदि सेहत के संबंध में बात करें तो आपको अपने और अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। आपको रोजगार के क्षेत्र में भी नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आप यदि व्यापार में निवेश करते है तो आपको उस क्षेत्र में नुकसान होने की संभावना है, आपकी नौकरी खतरे में पड़ सकती है जिसकी वजह से आपके आय के श्रोत भी कम हो सकते है। इसके अलावा यदि आपके मित्र आपसे पैसे कर्ज लेते है तो उनके द्वारा वो पैसे वापस किये जायेंगे इसकी संभावना भी बहुत कम है। आपको अपनी कीमती चीजों की हिफाजत खुद ही करनी चाहिए क्योंकि उन चीजों की चोरी होने की संभावना है। इतने सारे क्षेत्र में परेशानी झेलने की वजह से आपको ये सलाह दी जाती है कि आप शांत मन और धैर्य से काम लें और परिस्थिति को देख कर घबराये नहीं उनका डट कर सामना करें।

उपाय

- राहु को मजबूत बनाने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक, सूखे भुने हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का इस्तेमाल करना चाहिए। केतु को मजबूत बनाने के लिए ईख से बनी चीजें, नारियल के रेशे से बनी चीजें, सेंधा नमक, कुर्सियाँ, सोफा, गिलोय, नींबू और करहल का इस्तेमाल करना चाहिए। मुख्य सामग्री के साथ हवन करते समय हवन में हरी दूर्वा घास या ईख का इस्तेमाल करना चाहिए। संकटा दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ होगा।

- आप अपनी सिद्ध महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभान्वित हो सकते हैं।

सिद्धि - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	13-8-2037 22:50

समाप्ति तिथि:	23-10-2037 23:20

सिद्धा योगिनी की तीसरी अंतर्दशा "मंगला अन्तर्दशा" है। इसकी अवधि 4 महीने 21 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चन्द्रमा द्वारा शासित ये अवधि आपको आमतौर पर अनुकूल परिणाम देती है। ये अवधि आपके लिए सुख,धन, ऐश्वर्य लेकर आती है। ये अवधि आपके जीवन में ख़ुशी और आनंद का अग्रदूत है। आपको अपने करियर में तरक्की हासिल होगी, आप जिस रोजगार की तलाश कर रहे है वो रोजगार आपको इस अवधि में प्राप्त हो सकती है। आपकी नौकरी में पदोन्नति हो सकती है या आय वृद्धि हो सकती है। पहले से रुके हुए सभी कार्य आपके इस अवधि में पूरे होंगे।

पारिवारिक तथा वैवाहिक जीवन सुखमय होगा। आपके रिश्तेदार और आपके बच्चों से आपको कुछ खुशखबरी मिलने की संभावना है। आपका वैवाहिक जीवन आनंदमय होगा, आपके जीवनसाथी के साथ बेहद खुश महसूस करेंगे और हर परिस्थिति में आपको उनका साथ मिलता रहेगा।

इस अवधि में आपको आर्थिक लाभ भी प्राप्त होंगे, व्यवसाय में किये गए निवेश से आपको लाभ मिलने की संभावना है। चूँकि आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी है इसलिए आप आराम और विलासिता की हरसंभव चीज को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे।

ये अवधि आपके लिए बेहद अनुकूल है यदि आप कड़ी मेहनत और लगन से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करते है तो आपके सभी लक्ष्य भी पूरे होंगे और आप अपनी इच्छाओं को पूरा करने का भी सामर्थ्य रखते है।

सिद्धि - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	23-10-2037 23:20
समाप्ति तिथि:	15-3-2038 0:20

सिद्धा योगिनी की चौथी अन्तर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 7 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के प्रभाव की तरह इस अवधि का परिणाम भी कठोर और प्रतिकूल देने के लिए जाना जाता है। ये अवधि आपके जीवन में अनेक चुनौतियां लेकर आती है, जिसका आपको हर हाल में सामना करना पड़ता है। इस अवधि के दौरान आप में आत्मविश्वास की कमी होगी तथा आपको स्वभाव से अभिमानी और जिद्दी हो सकते है। आपके स्वभाव में इस प्रकार का बदलाव भी आपके लिए कठिनाई का कारण बन सकता है।

सूर्य का प्रकोप आपके व्यक्तिगत जीवन पर भी पड़ता है और आपकी आपके परिवार और मित्र से लड़ाई हो सकती है। आप उनसे इस हद तक बहस कर लेंगे कि आगे आने वाले समय में जब कभी आपको उनकी मदद की जरूरत होगी तो वो आपको मदद करने से इंकार कर सकते हैं। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि अपने व्यवहार पर नियंत्रण रखें और दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक तरीके का व्यवहार करें।

इस अवधि के दौरान आपको कुछ बुरी आदत भी लग सकती है और इस चक्कर में आप अपना बहुत सारा धन फिजूलखर्च कर देंगे या अपने उपयोग के लिए दूसरे के धन का दुरुपयोग करने की भी संभावना है। आप अपने मनोरंजन के विचार में अपना और अपने परिवार के लोगों का बहुत सारा धन पानी में डूबो सकते है। आपकी ये गतिविधियां आपके जीवन में अनेक परेशानी खड़ी कर सकता है।

इस अवधि में आपके ऊपर खतरा मंडरा सकता है जिसकी वजह से आपकी दुर्घटना होने की संभावना है। आपको आग या आग की किसी भी पदार्थ से दूर रहने की सलाह दी जाती है क्योंकि आग आपके लिए इस अवधि के बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप अपना ख्याल रखें और अपने स्वभाव को नियंत्रण में रखें।

उपाय

- आप पान के पत्ते, कमल के बीज, महुआ, लाल चंदन, आक के फूल, पत्ते और लकड़ी, और आंवला रख सकते हैं या इस्तेमाल कर सकते हैं।

> इनमें से एक या अधिक चीजें रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इससे भगवान सूर्य प्रसन्न होंगे। मुख्य सामग्री के साथ हवन करते समय, हवन में मदार/आक का उपयोग करना चाहिए। सिद्ध पिंगला दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ होगा।
>
> - आप अपनी सिद्ध महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभान्वित हो सकते हैं।

सिद्धि - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	15-3-2038 0:20
समाप्ति तिथि:	14-10-2038 1:50

सिद्धा योगिनी की पाँचवीं अन्तर्दशा "धान्या अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 9 महीने 11 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" को माना गया है। इस दशा में शनि के प्रभाव के बाद भी इसकी धान्या अंतर्दशा में बृहस्पति के प्रभाव की वजह से ये अवधि अनुकूल परिणाम देने में सक्षम है। ऐसा माना जाता है कि बृहस्पति भाग्य लेकर आता है जिसकी वजह से इस अवधि में आपको सौभाग्य प्रदान करता है।

ये अवधि ज्यादातर लोगों के लिए भाग्यशाली होता है और इस अवधि के दौरान आपको आपके पिछले पापों से मुक्ति मिलती है और आपके अच्छे कर्मो का परिणाम आपको प्राप्त होता है।

व्यवसाय के क्षेत्र की यदि बात करें तो ये अवधि आपके रोजगार को आगे बढ़ाने के अवसर ला सकती है और इस अवधि में आपको लाभ भी प्राप्त होंगे। रोजगार के क्षेत्र में आपको बेहतर अवसर प्राप्त होंगे जैसे आपकी वेतन में बढ़ोत्तरी हो सकती है या फिर पदोन्नति हो सकती है। व्यापार कर रहे लोगों के लिए भी ये अवधि फलदायी हो सकती है। आपका कोई कार्य जो पहले से अटका हुआ है वो इस अवधि के दौरान पूरा होने की संभावना है। यदि आप कोई नयी परियोजना शुरू करना चाहते है तो इससे बेहतर समय आपके लिए कोई और नहीं होगा। इस समय आपको अपनी परियोजना को पूरा करने के लिए आवश्यक संसाधन इस अवधि के बाद न मिलने की संभावना है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आपके जो भी कार्य है आप कोशिश करें कि इस अवधि के दौरान जो सभी कार्य पूरे हो जाये।

सिद्धि - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	14-10-2038 1:50
समाप्ति तिथि:	25-7-2039 3:50

सिद्धा योगिनी की छठी अंतरदशा "भ्रामरी अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 11 महीने और 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "मंगल" को माना गया है। इस अवधि में शनि की दशा तथा मंगल की अंतर्दशा मौजूद होती है जिसकी वजह से ये मिश्रित परिणाम देने के लिए अनुकूल है।

यह अवधि न तो बहुत अच्छा फल देती है और न ही बहुत बुरा फल देती है। ये अवधि यदि आपके जीवन में कठिन परिस्थिति लाता है तो उससे निकलने के उपाय भी यदि अवधि प्रदान करती है। ये अवधि आपके पारिवारिक जीवन तथा रोजगार के क्षेत्र दोनों ही स्थिति में आपको उम्मीद में अवसर और चुनौती दोनों प्रदान करती है। इस अवधि के दौरान आपको अपने कार्य के सिलसिले में विदेश जाने की संभावना बन सकती है, और आपका ये प्रवास काल अपने जितना सोचा उससे अधिक बढ़ भी सकता है। ऐसी भी संभावना है कि आप विदेश में बस सकते है यदि आप विदेश में बसना मंजूर नहीं करते है तो भी आप अपने घर में नहीं रह पायेंगे, आपको अपने घर से दूर रहना ही पड़ेगा। यदि आप अपने घर का त्याग कर अपनी रोजगार के लिए बाहर आते है तो आपके जीवन का ये बदलाव आपके पक्ष में काम कर सकता है।

यदि इस अवधि के नकारात्मक पक्ष की बात करें तो ये अवधि आपके लिए कुछ कठिनाई भी लाती है। आप सरकारी दस्तावेजों और अपने आय-व्यय के हिसाब के सभी कागज को हमेशा तैयार रखें क्योंकि सरकार आपसे ये सभी दस्तावेज कभी भी मांग सकती है और यदि उस वक़्त ये कागज आपके पास पूरे न हो तो अधिकारियों के द्वारा आप दण्डित भी हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान ऐसी संभावना है कि आप बुरी संगत में पड़ सकते है या आपको बुरी आदतें लग सकती है। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान अच्छे और बुरे दोनों वक़्त में अपना संयम न खोएं और समझदारी से काम लें।

सिद्धि - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	25-7-2039 3:50
समाप्ति तिथि:	14-7-2040 6:20

सिद्धा योगिनी की सातवीं अंतर्दशा "भद्रिका अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 13 महीने 29 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बुध" है। बुध के प्रभाव की वजह से इस अवधि के परिणाम भी आपके अनुकूल होंगे। ये अवधि आपके लिए ख़ुशी, धन, वैभव इत्यादि लेकर आएगा। आपको ख़ुशी तथा जश्न मनाने के कई मौके इस अवधि के दौरान मिलेंगे। ये अवधि आपके लिए खुशखबरी लेकर आ सकता है। आपके पारिवारिक जीवन में भी सुखमय माहौल रहेगा और आप अपने परिवार तथा मित्र के साथ जश्न मनाने के मौके प्राप्त करेंगे।

इस अवधि के दौरान आपकी आर्थिक तंगी भी दूर होगी जिसकी वजह से आप अपने घर को एक नया रूप देने तथा घर की साज-सज्जा के लिए अनेक संसाधन जुटाने में सक्षम होंगे। आप अच्छी आदतों को अपनी जीवन शैली में शामिल करेंगे और अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जीने की क्षमता रखते है।

यदि आपके स्वास्थ्य की बात की जाये तो आपका स्वास्थ्य इस अवधि में सही रहेगा और आपको अपने स्वस्थ जीवन के निर्माण के लिए इस अवधि का लाभ उठाना चाहिए। अपने स्वस्थदिनचर्या की वजह से आपको नयी ऊर्जा का आभास होगा।

कार्यक्षेत्र में भी आपको लाभ प्राप्त होगा, आपका संबंध आपके सहकर्मी और वरिष्ठों के साथ आपके संबंध में सुधार हो सकता है, जिससे आपके लिए अपना लक्ष्य हासिल करना आसान हो जायेगा। यदि आप कोई नया कार्य शुरू करने की इच्छा रखते है तो ये अवधि आपके कार्य को शुरू करने के लिए अनुकूल है। आपको सलाह दी जाती है कि आप चाहे जो भी कार्य करें बस पूरी लगन के साथ करें और इस अवधि का भरपूर लाभ उठायें।

सिद्धि - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	14-7-2040 6:20
समाप्ति तिथि:	13-9-2041 15:20

सिद्धा योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 9 महीने 11 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "शनि" है। शनि की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से ये अवधि प्रतिकूल परिणाम ही देती है। शनि द्वारा शासित चरण आमतौर पर आसान नहीं होता है।

इस अवधि में आपके आत्मविश्वास में कमी होने की संभावना है साथ ही आपके जीवन में कष्ट और क्लेश भी बना ही रहेगा। इस अवधि के दौरान आपको जीवन के हर कदम पर चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। रोजगार के क्षेत्र में भी आपको हानि होने की संभावना है, आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे किसी बात को लेकर दुखी हो सकते है जिसकी वजह से आपकी नौकरी पर भी खतरा हो सकता है। आपकी आय में कटौती या नौकरी जाने की वजह से आपको धन हानि का दुःख भी सहना पड़ेगा। अपने व्यापार के मामले में आप सोच समझ कर फैसला लें क्योंकि एक भी

गलत फैसला आपको वित्तीय नुकसान की खायी में धकेल सकता है और इसकी वजह से आपकी इज्जत-प्रतिष्ठा भी संकट में पड़ सकती है।

आपके वैवाहिक जीवन पर भी इस अवधि का प्रतिकूल प्रभाव ही पड़ेगा। जीवनसाथी के साथ आपके प्रेम में कमी आ सकती है, आप दोनों के बीच किसी बात को लेकर मतभेद हो सकते है। ये अवधि आपके प्रेम भरे स्वभाव को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा जिसका सीधा असर आपके प्रियजनों और आपके बच्चों पर पड़ेगा।

यदि स्वास्थ्य की बात करें तो स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अवधि बहुत अच्छी नहीं हो सकती है। आपको स्वस्थ रहने के लिए एक स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने और सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अगर आपको कोई भी स्वास्थ्य संबंधी समस्या का आभास होता है, तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें और उनकी बताई गयी बात का पालन करें। आपको एक बात समझने की आवश्यकता है कि समय चाहे कितना भी बुरा हो वो एक न एक दिन गुजर ही जाता है इसलिए आपको इस अवधि के दौरान घबराने की आवश्यकता नहीं है यदि आप शांत मन और संयम से काम लेंगे तो हर परेशानी से पार पा लेंगे।

> - आप अपनी सिद्ध महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभान्वित हो सकते हैं।

सनातन ज्योति, सनातन परंपरा में मानव एवं जीवों के कल्याण हेतु बनाई गई व्यवस्थाओं को एक नए ढंग में प्रस्तुत करना चाहती है जो कि इस युग में लाभप्रद हो सके।

Sanatan Jyoti

care@gauritechtrade.com